चाचा नेहरू



मुल्क राज आनंद

चित्र

के.के. हैबर

चाचा नेहरू

मुल्कराज आनंद

चित्र

के. के. हैबर

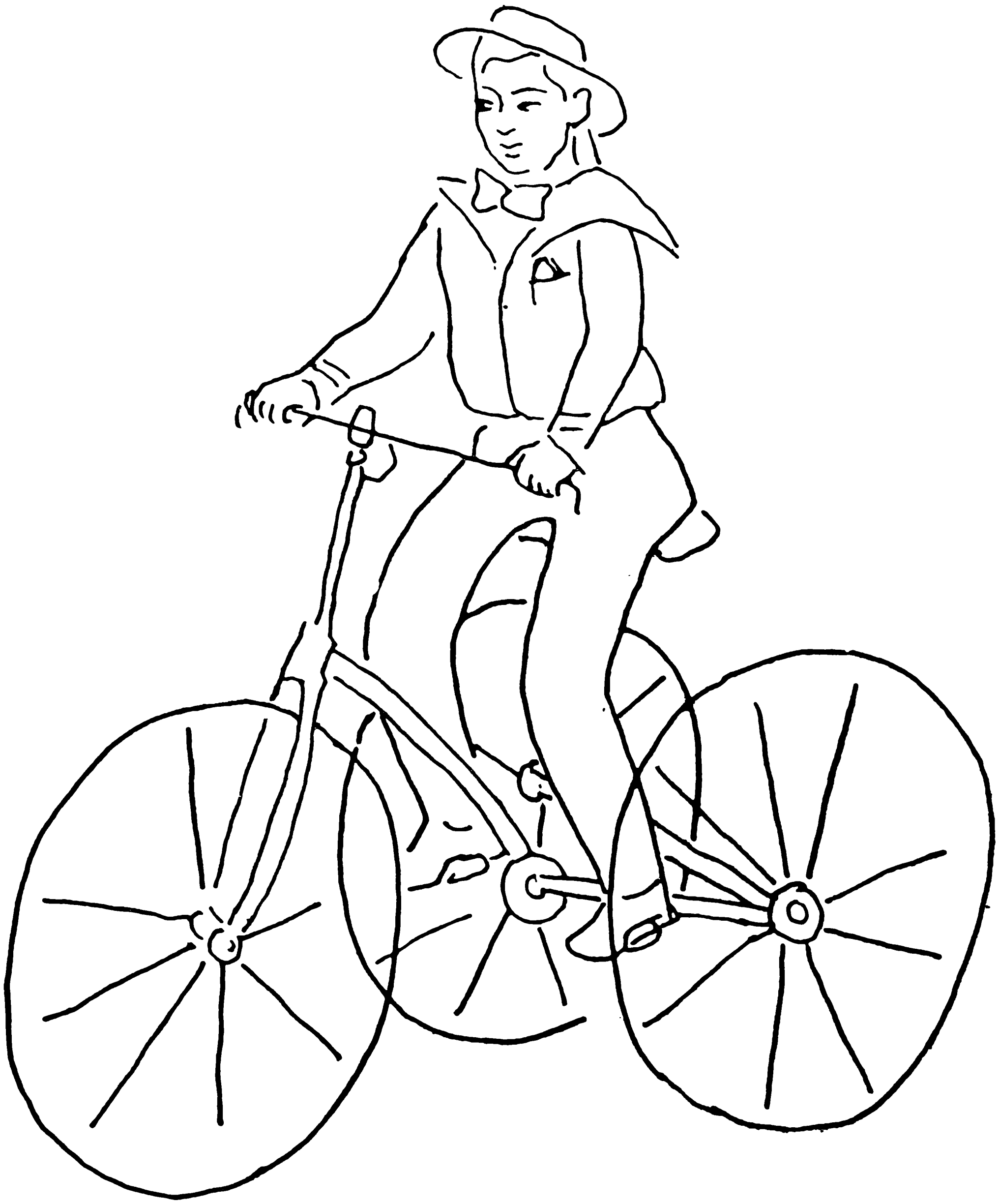
स्टार बुक्स
नई दिल्ली

MULKRAJ ANAND
CHACHA NEHRU
STAR BOOKS, NEW DELHI
Rs. 25.00

ISBN No. 81-7144-013-4
चित्र : के० के० हैबर
इस पुस्तक का प्रकाशन स्टर्लिंग
पब्लिशर्स प्रा० लि०
नई दिल्ली-110016 के
सौजन्य से

प्रकाशक : स्टार बुक्स
50 कालू सराय
हौज खास
नई दिल्ली-110016
मूल्य : पच्चीस रुपये (25/-)

समर्पित उन बच्चों को जिन्हें
चाचा नेहरू ने हमेशा अपना समझा



१

नेहरू परिवार

उस नगर का नाम प्रयाग था जो बाद में इलाहाबाद नाम से जाना जाने लगा था। यह नगर गंगा यमुना और कथानकों के अनुसार भूमिगत सरस्वती नदी के संगम पर

बसा हुआ है। तीन नदियों के संगम ने इसको तीर्थ स्थान बना दिया है। सदियों से हर बारहवें वर्ष बाद यहां पर कुम्भ मेला लगा करता है। यहां निरन्तर तीर्थ यात्री स्नान के लिये आते रहते हैं। सरकार ने इलाहाबाद को आगरा और अवध प्रान्त की राजधानी बनाया और यहां पर पुराने छोटे से नगर के निकट उच्च न्यायालय की स्थापना की।

नेहरू परिवार यहां आकर बस गया।

मूलतया नेहरू परिवार का निवास स्थान काश्मीर की सुन्दर घाटी थी। उन सुन्दर भवनों, केशर के खेतों, शीतल स्वादिष्ट जल और अंगूरों की घाटी को सबसे पहले छोड़ कर आने वाले उनके पूर्वज का नाम था राज कौल। वे मुगल बादशाह फर्रुखशियर के जमाने में दिल्ली आये और बादशाह के दरबार में पहुंच गये। बादशाह ने पाया कि वे संस्कृत, अरबी और फारसी इस प्रकार तीन भारतीय भाषायें जानते थे। शाही रीति रिवाज के अनुसार बादशाह ने उस पढ़े-लिखे ब्राह्मण को एक छोटी-सी जायदाद दी जिसमें एक नहर के किनारे एक छोटा-सा मकान भी बना हुआ था। तब से वह कौल नेहरू के नाम से जाने जाने लगे थे। बाद में उनके नाम में से कौल हटा दिया गया और केवल नेहरू ही रह गया। इस प्रकार नहर के निकट रहने वाले राज कौल के वंशजों ने अपने को नेहरू कहलाना आरम्भ कर दिया।

बैरिस्टर मोतीलाल नेहरू और उनका परिवार

सन् १८५७ के विद्रोह के बाद नेहरू खानदान के लोग आगरा में आकर बस गये। यहां आगरा में ६ मई, १८६१ को ठीक उसी दिन जिस दिन रवीन्द्रनाथ टैगार का जन्म हुआ था मोतीलाल नेहरू का जन्म हुआ। मोतीलाल के पिता गंगाधर नेहरू, जो कि मुगल बादशाह के दरबार में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के कानूनी परामर्शदाता थे, मोतीलाल के जन्म से तीन मास पूर्व ही स्वर्ग सिधार गये थे।

जब नेहरू परिवार आगरा से इलाहाबाद चला गया और मोतीलाल ने स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली तो वे म्यूर सेन्ट्रल कालेज में प्रविष्ट हो गये। उन्होंने एक अंग्रेज प्रोफसर हैरिसन के शिष्यत्व में पढ़ाई की। हैरिसन उनमें विशेष रुचि लेते थे, वे उन्हें अपने ही पुस्तकालय से पुस्तकें ला-ला कर दिया करते थे जिससे कि उनको इस विशाल दुनिया का ज्ञान हो सके।

मोतीलाल नेहरू तेज दिमाग वाले, सुन्दर किन्तु हठी स्वभाव के विद्रोही थे। उनको यह आभास हो गया था कि बी० ए० की परीक्षा में उनका पहला पर्चा ठीक नहीं



हुआ है। इसलिये वे दूसरा पर्चा देने के लिये गए ही नहीं। किन्तु मोतीलाल को पहले पर्चे में बहुत अच्छे अंक मिले थे, दूसरा पर्चा न देने के लिए प्रोफेसर हैरिसन ने उनको बहुत लताड़ा था। अगले वर्ष उन्होंने परीक्षा दी और प्रथम श्रेणी में उतीर्ण हुए।

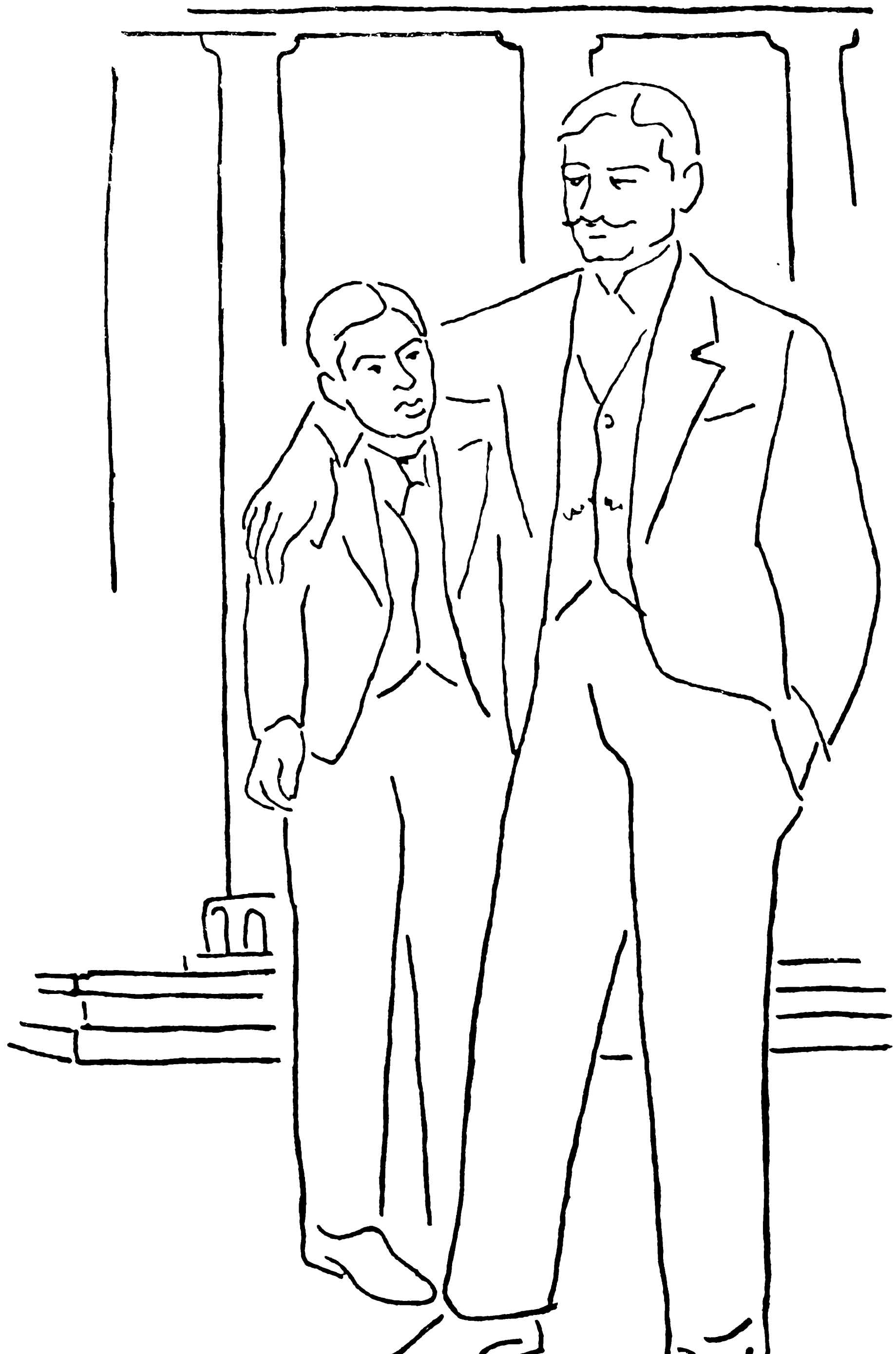
कॉलेज की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद मोतीलाल ने अपने भावी जीवन के विषय में अपने भाई नन्दलाल की तरह ही विचार किया और उनका अनुसरण करते हुए उन्होंने हाई कोर्ट वकील की परीक्षा दी और १८८२-८३ के वर्ष में वे न केवल प्रथम स्थान पर आये अपितु उन्होंने लेम्सडन स्वर्ण पदक भी जीत लिया। तीन वर्ष तक कानपुर में सफल वकील सिद्ध होने के उपरान्त वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय में आ गये।

मोतीलाल ने २० वर्ष की युवावस्था में लाहौर निवासिनी कश्मीरी कन्या से विवाह किया। किन्तु अपने पुत्र को जन्म देते समय उनका देहान्त हो गया। बहुत शीघ्र ही वह बच्चा भी चल बसा।

मोतीलाल ने उसके बाद १५ वर्षीया स्वरूप रानी से विवाह किया। उनकी यह युवती दुलहिन बहुत ही सुन्दर थी : "सुन्दर, जैसे हाथी दांत का खिलौना। प्यारी-प्यारी जैतूनी आंखों वाली। बहुत ही सुन्दर हाथ पैर वाली। घने, काले और घुंघराले बाल, जो उनकी कमर से भी नीचे तक जाते थे।"

उनकी पत्नी स्वरूपरानी से मोतीलाल को एक पुत्र हुआ किन्तु वह भी जीवित नहीं बचा।

१४ नवम्बर, १८८९ को उनके द्वितीय पुत्र, जवाहर लाल नेहरू का जन्म हुआ।



२

जवाहर लाल नेहरू का पालन पोषण

जवाहरलाल नेहरू के जन्म से पूर्व ही बैरिस्टर के रूप में मोतीलाल नेहरू ने बहुत नाम कमा लिया था। अपने बहुत अधिक पढ़े लिखे होने के कारण, और अपने कठिन परिश्रम से उन्होंने अपार धन-सम्पत्ति बना ली थी। अब वे पुराने शहर के एक बहुत ही पुराने मकान से ब्रिटिश सिविल लाइन्स में रहने के लिए आ गए थे। वहां उन्होंने एक बहुत बड़ा बंगला बनवाया, जिसमें एक तरण-ताल भी था। उन्होंने उसका नाम 'आनन्द भवन' अर्थात् मन को आनन्द देने वाला रखा। उनकी गिनती सभ्य पुरुषों में की जाती थी। उनको अरबी, फारसी और अंग्रेजी की अनेक कवितायें याद थीं। तीव्र बुद्धि वाले होने के साथ-साथ वे बड़े मजाकिया भी थे और उच्च श्रेणी के वार्तालाप में रुचि रखते थे। इस कारण उनका घर स्त्री-पुरुष, अमीर गरीब सभी को बैठक घर सा बन गया था।

शाम के खाली समय में उनके अनेक विद्वान् मित्र उनसे मिलने के लिये उनके घर पर आया करते थे। अपने आने वाले मित्रों के साथ वे सिगरेट पीते हुए, डोली नुमा कुर्सी पर घर के लान में बैठे हुए तमाम संसार की बातों पर चर्चा किया करते थे।

इस वातावरण में जवाहरलाल नेहरू ने पढ़ना सीखा। यहीं उन्होंने इलाहाबाद से बाहर के संसार के विषय में भी सुना।

छोटे लाट और घर की शिक्षा

इतने बड़े बंगले में जहां नित्य प्रति लोग आते-जाते रहते थे, जवाहरलाल नेहरू ही एकमात्र बालक थे। उनके पिता का रहन-सहन पारम्परिक सम्मिलित परिवार में रहने की अपेक्षा कुछ अलग ही अंग्रेजों की तरह का था। सारे दिन तो वे घर से बाहर उच्च न्यायालय में रहते थे। जवाहरलाल की बहिन का जन्म सन् १९०० में हुआ था, वह इतनी छोटी थी कि उसके साथ खेला नहीं जा सकता था। घर के नौकर उनके साथ

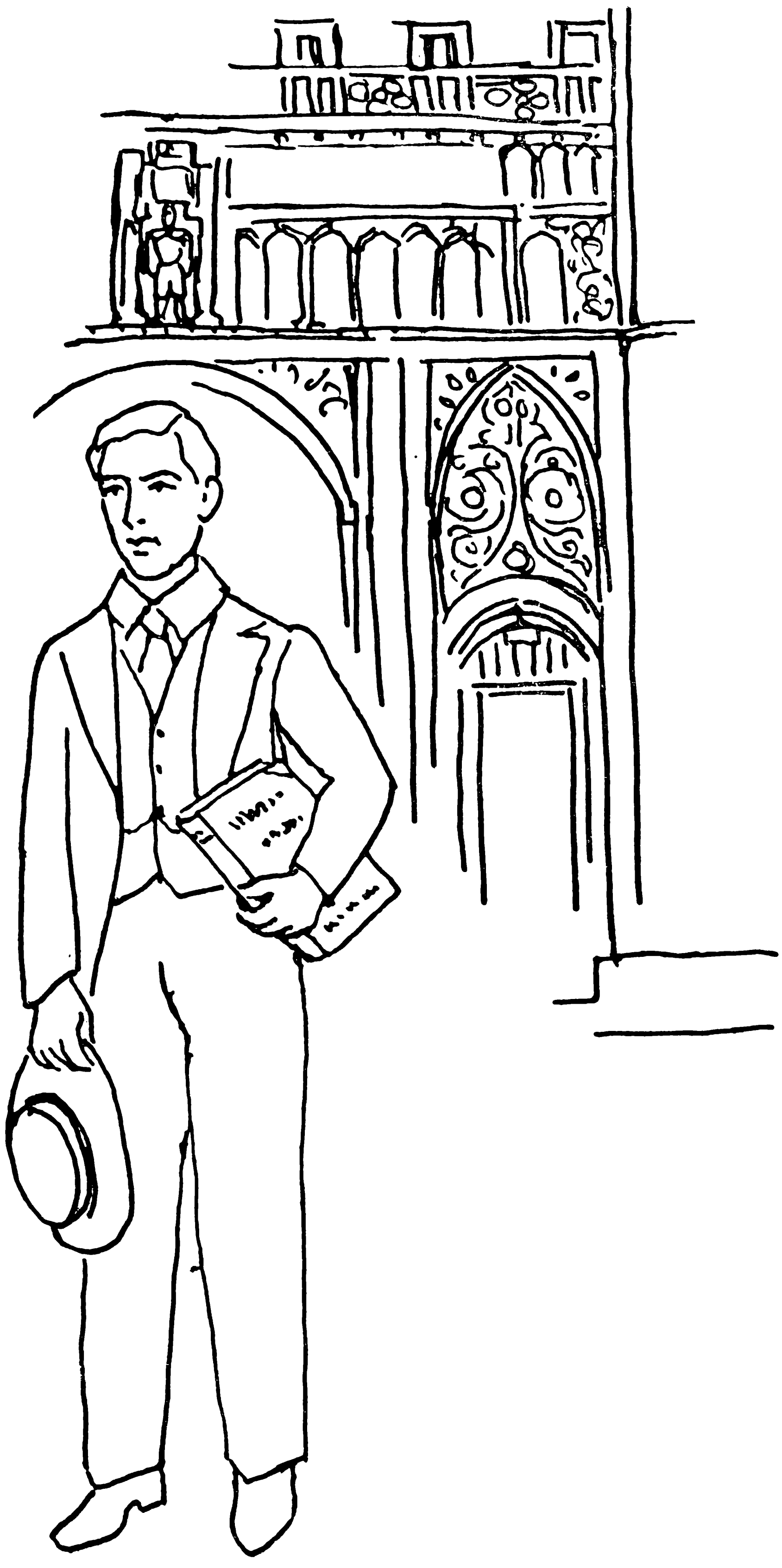
राजकुमार जैसा व्यवहार किया करते थे। यहां तक कि यदि वे चाहें भी तो, वे साधारण बच्चों में नहीं मिल सकते थे। इसलिये वे अपनी तिपहिया साइकिल पर चढ़कर अपने बगीचे के चक्कर लगाते। उस समय वे अंग्रेजों के लड़कों की भांति नौसैनिक सूट पहन कर घूमते थे। कभी-कभी शाम के समय छोटी-सी घोड़ी पर बैठा कर उनकी अंग्रेज गवर्नेस उनको अंग्रेज बच्चों के साथ खेलने के लिये ले जाती थी जो अपनी आयाओं के साथ मैदान में आये हुए होते थे।

जब जवाहरलाल नेहरू की आयु स्कूल जाने लायक हुई तो उनको घर में ही पढ़ाने के लिए फर्डिनान्ड ब्रुक नाम के व्यक्ति को रख लिया गया। मिस्टर ब्रुक आयरलैंड वासी थे और वे श्रीमती ऐनी बेसेन्ट के अनुयायियों में से थे। श्रीमती बेसेन्ट प्राचीन भारतीय परम्परा की बड़ी प्रशंसक थीं। वे बनारस में हिन्दू कालेज के प्रिंसिपल के रूप में रहने लगीं थीं।

मिस्टर ब्रुक ने जवाहरलाल नेहरू को उपन्यास, कहानियां तथा विज्ञान और धार्मिक पुस्तकों को पढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया। अपने प्रारम्भिक जीवन में बड़ी उत्सुकता से जवाहरलाल नेहरू ने जिन लेखकों को पुस्तकें पढ़ीं वे थे—स्कौट, थैकरे, डिकन्स, किपलिंग, लुइस कैरोल और एच० जी० वैल्स। इसके साथ-साथ मिस्टर ब्रुक ने उनको अपनी छोटी-सी प्रयोगशाला में विभिन्न प्रकार के रंगों का प्रयोग करना भी सिखाया। चुम्बक और ज्योमेट्री बौक्स का प्रयोग करना भी उन्होंने उनको सिखाया।

एक दिन श्रीमती ऐनी बेसेन्ट ने इलाहाबाद में एक व्याख्यान दिया। जवाहरलाल नेहरू पर उनके व्याख्यान का बड़ा प्रभाव पड़ा। अपने व्याख्यान में श्रीमती बेसन्ट ने वैदिक युग के विचारों के पुनर्जागरण पर प्रकाश डाला। जवाहरलाल नेहरू ने उनका शिष्य बनना चाहा।





३

लन्दन के हैरो स्कूल में

जब जवाहरलाल नेहरू सोलह वर्ष के हुए तो उनके पिता ने निश्चय किया कि अब उनकी शिक्षा इंग्लैंड में होनी चाहिये।

मोतीलाल नेहरू म्यूर सेन्टल कालेज इलाहाबाद के प्रिंसिपल हैरिसन का एहसान मानते थे, जिसको वे कभी भूलते नहीं थे। और वे यह भी भली भांति जानते थे कि ब्रिटिशर्स द्वारा भारत वर्ष में स्थापित इंग्लैंड के ढंग पर स्कूल और विश्वविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा की अपेक्षा इंगलिश शिक्षा प्रणालो कहीं अधिक आगे बढ़ी हुई है। इंगलिश स्कूलों और विश्वविद्यालयों में वहां के अध्यापक विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया करते थे। वह जानते थे कि मिस्टर हैरिसन ने न केवल उनके मस्तिष्क और उनकी किशोरावस्था की उड़ान को, अपितु उनके शरारती स्वभाव को भी बड़ा प्रोत्साहन दिया था। इस लिये उन्होंने सोचा कि अंग्रेजी अध्यापकों के विशाल और उदार विचारों के बीच उनके पुत्र को अधिक लाभ होगा।

नेहरू परिवार लन्दन के लिये जहाज में चला। कश्मीरी ब्राह्मण विरादरी की काला सागर पार न करने की परम्परा की उन्होंने परवाह नहीं की। उनके इस आचरण से क्षुब्ध होकर उनकी जाति के रूढ़िवादी पुरखों ने उन्हें उनका 'हुक्म-पानी' बन्द करने की धमकी दी। अंग्रेजी जीवन पद्धति के हामी बैरिस्टर मोतीलाल नेहरू ने सदा ही उनके रीति रिवाजों का विरोध किया। अब वे अपने पुत्र को विश्व-नागरिक बनाने के लिये इंग्लैंड ले गये थे।

अक्टूबर १६०५ में जवाहर लाल नेहरू को लन्दन के निकट हैरो के प्रसिद्ध पब्लिक स्कूल में प्रविष्ट करा दिया गया।

वहां अधिकांश विद्यार्थी विभिन्न अध्यापकों के साथ विभिन्न घरों में विभिन्न संरक्षकों के संरक्षकत्व में रहा करते थे। इस प्रकार जवाहरलाल डा० वुड के घर में रहते थे।

वहां का जीवन नियमित और प्रबल अनुशासन के आधार पर होता था। पढ़ाई के बाद क्रिकेट और फुटबाल खेलना अनिवार्य था।

गर्वीले भारतीय का निर्माण

प्रारम्भ में तो जवाहरलाल को घर की बड़ी याद आती रही। किन्तु वहां उनको अकेले रहने का तो ससय ही बहुत कम मिला करता था। शीघ्र ही वे अपनी पढ़ाई और खेलों में खो गये। डा० वुड ने अनुभव किया कि जवाहरलाल को थोड़ी बहुत लेटिन भी आती है और वे अन्य इंगलिश विद्यार्थियों की अपेक्षा किताबें अधिक पढ़ लेने के साथ-साथ उनसे कुछ अधिक जागृत अवस्था के हैं। इस लिये उन्होंने न केवल अधिकाधिक पढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया अपितु वे उनके साथ योरोपियन इतिहास और संसार के महापुरुषों के विषय में चर्चा भी करने लगे। राइट बन्धुओं तथा अन्य लोगों की प्रथम हवाई लड़ाई जैसे कि सान्टोज डयूमा, फरमैन लैथम और ब्लेरियट ने जवाहरलाल नेहरू को आश्चर्य चकित कर दिया।

जबकि सम्पन्न इंगलिश घरों के बालक केवल जो इंग्लैंड का होता था उसके प्रति ही मोह व्यक्त किया करते थे, जवाहरलाल नेहरू जिनके मस्तिष्क में अपने इलाहाबाद में घर के बाहर शाम के समय लान में बैठकर होने वाली बातें विद्यमान थीं, वे वहां हैरो में रहते हुए स्वयं भारतीय होने पर गर्व अनुभव करने लगे।

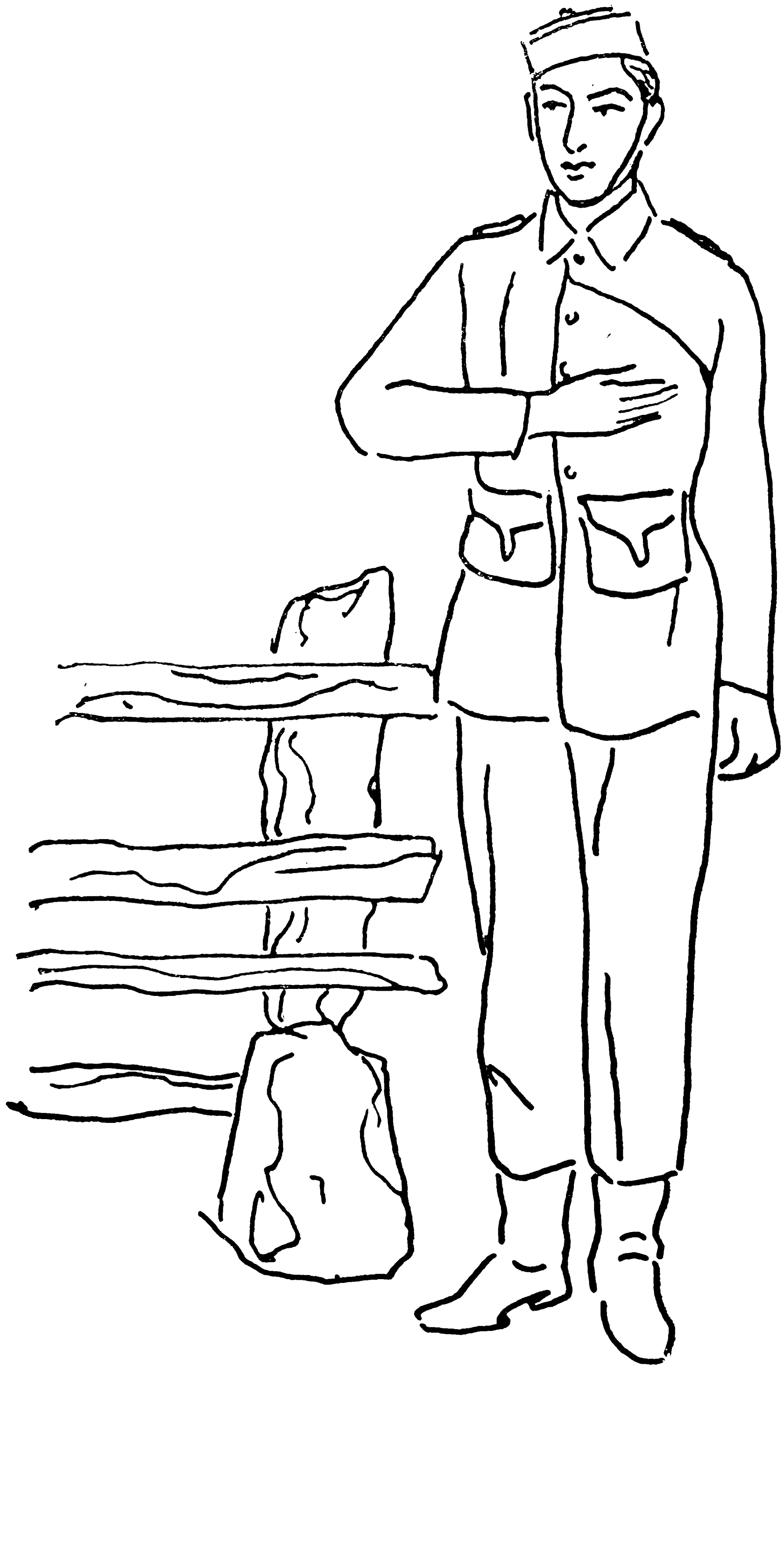
उनको यह भी स्मरण था कि जब सन् १९०५ में जापान द्वारा जार के रूस को पराजित करने का समाचार भारत में सुना था तो उस समय उनको कितनी प्रसन्नता हुई थी।

उसके बाद बंगाल के विभाजन पर लौर्ड कर्जन और ब्रिटिश सरकार का भारत में जो विरोध हुआ था उसकी अफवाहें आने लगीं। उन्होंने अनुभव किया कि इससे उनमें क्रोध का संचार हुआ था। उन्होंने यह भी सुना कि भारत की स्वतंत्रता चाहने वाले लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को कालापानी की सजा दी गई है। कुछ दिनों बाद छुट्टियों के दिनों लन्दन में कुछ भारतीय विद्यार्थियों ने उनके सम्मुख लोकमान्य तिलक के नाम का भी उल्लेख किया था। यह संयोग की ही बात थी कि ठीक उसी समय उनको इटली के महापुरुष गैरीबाल्डी जिसने अपने देश को मुक्त कराया था, की जीवनी पुरस्कार के रूप में प्राप्त हुई।

जीवन से शिक्षा

जवाहरलाल नेहरू ने अनुभव किया कि हैरो में, जहां कि ब्रिटिश विद्यार्थी भारतीयों को उनके गेहूँये रंग के कारण निम्नतर समझते थे, वे कुछ वेग से आगे बढ़ रहे हैं। उनकी इच्छा होती थो कि वे समस्त संसार का भ्रमण कर मैजिनी, अब्राहिम लिंकन, जौन स्टुआर्ट मिल आदि-आदि महापुरुषों, जिन्होंने मानवता को मोक्ष दिलाया था, उनके विषय में जानकारी प्राप्त करें।

वे जीवन से शिक्षा ग्रहण करना चाहते थे।



४

ट्रिनिटी कॉलेज, कैम्ब्रिज में

सन् १९०७ में जवाहरलाल नेहरू ने कैम्ब्रिज में ट्रिनिटी कॉलेज में प्रवेश ले लिया। यहां उन्होंने अपनी उपाधि परीक्षा के लिये मुख्यतया कैमिस्ट्री, ज्योलोजी और बौटनी आदि विज्ञान के विषय ही लिये। स्कूलों की अपेक्षा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में विद्यार्थी अधिक स्वतंत्र थे। उस समय शीघ्र ही उन्होंने अनुभव किया कि वे नीत्से, ज्योर्ज बर्नार्ड शौ, बरटन्ड रसल, हैवलौक ऐलिस तथा अन्यान्य प्रबुद्ध विचारकों और दार्शनिकों के विषय में और उनकी रचनाओं के विषय में चर्चा करने लगे हैं।

जैसा कि अन्य अनेक भारतीय विद्यार्थी करते आये थे, जवाहरलाल नेहरू ने भी बैरिस्ट्री की परीक्षा में प्रवेश किया।

युवक होने के नाते, विद्यार्थियों के साथ होने वाले वार्तालाप ने उनको सरल एवं सम्मानजनक जीवन बिताने की ओर उन्मुख किया, किन्तु उनके मन में किसी प्रकार के साहसिक और संघर्षपूर्ण कार्य करने की ललक भी जागने लगी। अधिक लोगों के सामने बोलने में उनको लज्जा का बोध होता था। यद्यपि वे कैम्ब्रिज में 'भारतीय विद्यार्थी मजलिस' में उपस्थित रहते थे, किन्तु वहां उन्होंने कभी वाद-विवाद में भाग नहीं लिया। किन्तु जब बिपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय और गोखले आदि भारतीय नेताओं ने कैम्ब्रिज में आकर मोहक व्याख्यान दिए तो उनका उनके हृदय पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा।

उस समय कैम्ब्रिज में उनके साथ-साथ सैफुद्दीन किचलू, सैयद महमूद, टी० ए० शेरवानी और एस० एम० सुलेमान आदि भी वहां शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। वे वहां पर ब्रिटिश राज्य के अन्तर्गत, विशेषतया विदेशियों द्वारा दिये जाने वाले दर्दनाक दुखों और कष्टों के विषय पर चर्चा किया करते थे। वे वहां से लन्दन गये और विभिन्न देशों से निष्कासित विद्रोहियों से जो कि ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत जेल जाने से बचने के लिये इधर-उधर भागे फिर रहे थे, उनके द्वारा लिखित राजनीतिक पत्रकों को खरीद कर लाये।

कैम्ब्रिज में जवाहरलाल नेहरू ने सन् १९१० में उच्च अंकों से द्वितीय श्रेणी में



उपाधि प्राप्त की। उन्होंने इतिहास, उपन्यास और राजनीति के अध्ययन में अधिक समय बिताया था।

सन् १९०९ की गर्मियों की छुट्टियों में उनके पिता योरोप में थे। उन्होंने जवाहरलाल को सुझाव दिया कि वे 'इंडियन सिविल सर्विस' परीक्षा में बैठें। किन्तु तब उनकी आयु कम होने के कारण वे उसमें नहीं बैठ सके।

बैरिस्टर बने

तब जवाहरलाल ने निश्चय किया कि अपनी कानून की पढ़ाई पूरी करेंगे। इसके लिये उन्होंने कैम्ब्रिज को छोड़ दिया और लन्दन में रहने के लिये चले गये।

विद्रोह की ज्वाला

लन्दन जाकर उनकी जीवन शैली बदल गई। किन्तु उसके साथ ही वे बर्नार्ड शौ, एच० जी० वैल्स, सिडनी और बीटरिश वेब जैसे ब्रिटिश समाजवादियों, जिन्होंने उस समय

वहां पर 'फेबियन सोसायटी' की स्थापना कर ली थी, उनकी चर्चाओं में बड़ी गहनता से रुचि लेने लगे। इन प्रौढ़ पुरुषों के माध्यम से उनको राजा के घर नगर में ऐशो आराम से रहने वाले भारतीय धनी विद्यार्थी का खोखलापन समझ में आ गया। जैसा कि उन्होंने बाद में लिखा : "बिना किसी शान अथवा लज्जा के मैंने 'बार' की परीक्षा पास कर ली।"

उनके माता-पिता चाहते थे कि वे जल्दी से भारत वापस आ जाएं। इस प्रकार वे हैरो और कैम्ब्रिज में प्रशिक्षित बुद्धिशील और बैरिस्टर-एट-लौ के रूप में सन् १६१२ में भारत वापस आ गये।

काला साहिब की वापसी

उलझे हुए और अनिश्चित, अपने इंग्लैंड में निवास के दिनों इतना तो उनकी समझ में आ गया था कि वे केवल एक भारतीय हैं न कि काला अंग्रेज। किन्तु उनको यह अनुभूति होने लगी कि वे भारत के विषय में तो कुछ भी नहीं जानते।

५

भारतीय या काला अंग्रेज

जवाहरलाल नेहरू ने निश्चय किया कि वे अपने देश के विषय में खोज करेंगे। उन्होंने अनेक पुस्तकों का अध्ययन किया, सारे देश-भर का भ्रमण किया, और सब स्थानों पर उन्होंने देखा कि जहां-जहां वे गये वहां के लोग निर्धन हैं। किन्तु धनी लोग, चाहे वे अंग्रेज हों अथवा कि भारतीय, वे उनकी कोई चिन्ता नहीं करते थे।

योरोप में जवाहरलाल ने प्रगति देखी थी। वे उस समय बर्लिन में विद्यमान थे जब काउण्ट जैपलिन अपने नये एअर शिप में स्विटजरलैंड की लेक कौंस्टान्स से जर्मनी के टैम्पल हौफ के लिये उड़ा था। किन्तु भारत में उन्होने अपने चारों ओर निर्धनता और उपेक्षा को मण्डराते हुए देखा था। सन् १९१२ के दिसम्बर मास में वे कांग्रेस के बांकीपुर अधिवेशन में गये। यहां से उनको एक नई दिशा प्राप्त हुई। बाद में उन्होंने इस सम्बन्ध में लिखा : "वह अधिवेशन अंग्रेजियत से परिपूर्ण उच्चवर्ग के लोगों का अधिवेशन था, जहां लोग मूल्यवान परिधान में सजधज कर भाग ले रहे थे।"

कांग्रेस के नेता लोगों की केवल इतनी-सी ही मांग थी कि अंग्रेज शासक उनको कुछ टुकड़े दे दें। स्वाधीनता की मांग करने का उनमें साहस ही नहीं था। वे तो केवल अपने पुत्रों के लिये अच्छी नौकरियों की ही आशा करते थे। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जैसे विद्रोही नेताओं की मांग पर अंग्रेजों ने 'मिन्टो-मारले सुधार' के रूप में कुछ सान्त्वना पुरस्कार देने की घोषणा की थी। इन सुधारों के आधार पर यदि ब्रिटिश सरकार चाहे तो कभी वह कुछ धनी भारतीयों से विचार विमर्श कर लिया करेगी।

अधीर बैरिस्टर की निराशा

जवाहरलाल नेहरू ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत आरम्भ कर दी। किन्तु बार की लाइब्रेरी में बैठकर बैरिस्टर और वकील लोग जो बातें किया करते थे और

अपने दलालों द्वारा मुकदमों की अपेक्षा किया करते थे उससे उनको खीझ होने लगी। इसी प्रकार इंडियन क्लबों का वातावरण भी नकलची काले साहबों के कारण और भी खिझाने वाला-सा लगता था। इंगलिश क्लबों में भारतीयों को प्रविष्ट नहीं किया जाता था।

उदारवादियों से निराशा

भारत में एक 'सर्वेन्टस ऑफ इंडिया सोसाइटी' जिसमें लोगों ने साधारण-सा पारिश्रमिक लेते हुए स्वयं को देशहित के लिये न्योछावर कर दिया था, उससे नेहरू बड़े प्रभावित हुए थे। किन्तु इस संस्था की राजनीति बड़ी ही नम्र और उदार जैसी थी। वे अपने देशवासियों की दुर्दशा के मूल कारण तक पहुंचने के लिये प्रयत्नशील नहीं थे।

श्रीनिवास शास्त्री, गोखले, तेजबहादुर सप्रू जैसे उदार नेता सरकार के दरबार में अंग्रेजी भाषा में कुछ साधारण सुविधाओं के लिये अपीलें भेजा करते थे। वे चाहते थे कि यदि कुछ मात्रा में भारत को स्वतन्त्रता दी जाय तो वे अंग्रेज सरकार के साथ सहयोग करेंगे। जवाहरलाल को उनसे भी निराशा ही हुई।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद के आघात

उन्हीं दिनों प्रथम विश्व महायुद्ध आरम्भ हो गया। भारत पर 'डिफेन्स औफ इंडिया एक्ट' थोप दिया गया। इस एक्ट के माध्यम से उन लोगों के मुंह को बन्द कर दिया गया जो कहते थे कि जो भारतीय सैनिक जिस झगड़े के विषय में कुछ जानते ही नहीं, ब्रिटिश राज्य की ओर से उनके लिये युद्ध में लड़ने के लिये नहीं भेजे जाने चाहिये।

वास्तविक कठिनाई यह थी कि जवाहर लाल ने अपने पिता को इस विषय में सर्वथा अनिश्चित मस्तिष्क का व्यक्ति पाया जो यह नहीं सोच पा रहा था ब्रिटिश सरकार के कुछ और सुधारों की मांग की जाय अथवा कि पूर्ण स्वराज्य मांगा जाय। बैरिस्टर होने के नाते मोतीलाल नेहरू चाहते थे कि इस विषय पर वाद-विवाद हो। किन्तु जवाहरलाल की युवकोचित उद्विग्नता में उनको निष्ठा दिखाई दे रही थी। तब तक पिता और पुत्र दोनों ही अंग्रेजी रहन-सहन को ही अपनाये हुए थे। किन्तु जहां मोतीलाल नेहरू अपने स्वभाव और आदतों में अभी भी रईसजादा थे वहां जवाहरलाल नेहरू इन रईसों के, जिसमें उनके अपने पिता भी सम्मिलित थे, रहन-सहन पर प्रश्न करने लगे थे। पिता ने अनुभव किया कि उनका पुत्र विद्रोही होता जा रहा है। और पुत्र को इस बात का दुःख था कि उसकी

अन्तरात्मा उसको अपने पिता के रहन-सहन से असहमत होने की प्रेरणा दे रही थी । जो भी हो, जब मोतीलाल की मित्र श्रीमती ऐनी बेसन्ट को सरकार ने घर में नजरबन्द कर दिया तो इससे उनको बड़ा आघात लगा और वे अपने पुत्र जवाहरलाल की ओर झुक गये ।

महात्मा गांधी से भेंट

दिसम्बर १६१६ में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर पं० जवाहरलाल नेहरू की महात्मा गांधी से पहली बार भेंट हुई । एक सीधा-सादा, स्थिर-सा और तपस्वी दिखाई देने वाला, जिसने दक्षिण अफ्रीका में गोरों का विरोध किया था, उस व्यक्ति ने नेहरू को प्रभावित किया । गांधी जी के सत्याग्रह और अहिंसा की बहुत-सी बातों को वे समझ नहीं पाये । किन्तु उनके मन-मस्तिष्क में कहीं यह धारणा बैठ गई कि भारत का यह भावी भाग्य-विधाता भारतवासियों को अंग्रेजों के शासन के प्रति मोह से मुक्त कर उन्हें वास्तविक स्वतन्त्रता संघर्ष के लिये तैयार कर लेगा ।

सरोजिनी नायडू का प्रभाव

तभी जवाहर लाल नेहरू ने सरोजिनी नायडू का वह धारा प्रवाह भाषण सुना जिसमें उन्होंने मानव के बराबरी और स्वतन्त्रता के अधिकारों के विषय में बताया था ।

तभी महान् आइरिश विद्रोही रोजर केसमैंट द्वारा अपने मुकदमे की सुनवाई के अवसर पर आयरलैंड की स्वतन्त्रता के लिये दिये गये भाषण का समाचार भी मिला । जवाहर लाल ने क्रोमवैल द्वारा आयरलैंड को पराजित कर किस प्रकार उस देश को दास बना लिया गया था और बाद में किस प्रकार व्यापारी ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेना के जनरल रोबर्ट क्लाइव ने भारत पर अधिकार कर उसको दास बना लिया था, नेहरू ने यह सब भी पढ़ा ।

आयरिश संघर्ष का अध्ययन

जवाहरलाल ने अंग्रेजों के उस षड्यन्त्र के विषय में भी पढ़ा कि किस प्रकार बंगाल में मीर जाफर जैसे शाहजादों को खरीद लिया था । उन्होंने ब्रिटिश शासन से मुक्ति पाने के लिये आयरिश लोगों के संघर्ष के विषय में अनेक पुस्तकों को पढ़ा ।

६

कमला कौल से विवाह

सन् १९१६ की वसन्त ऋतु में जवाहरलाल नेहरू ने कश्मीरी युवती कमला कौल के साथ विवाह किया। वे नहीं चाहते थे कि उनके माता-पिता द्वारा उनके विवाह का प्रबन्ध किया जाय। एक पत्र द्वारा उन्होंने अपने पिता को इसका प्रतिरोध भी किया था। किन्तु जब उन्होंने उस कश्मीरी युवती को देखा तो उसे पसन्द कर लिया और विवाह की स्वीकृति दे दी।

विवाह के बाद दम्पति कश्मोर गये। वहां वह उन सुन्दर घाटियों में भ्रमण करते रहे। उन्होंने उच्चस्थ जोजीला-दर्रा को भी पार कर लिया। उनकी भोली-भालो युवा पत्नी ने केवल बड़ी नाजुक मिजाज थी अपितु वह सर्वथा अनुभवहीन भी थी। इस प्रकार इन भ्रमण के दिनों में जवाहरलाल नेहरू को अपनो पत्नी को वह सब बताने का समय मिल गया जिसमें भारत की स्वतन्त्रता के लिये काम करने की उनकी अपनी इच्छा थी। कमला ने जवाहरलाल की इच्छा का अर्थ भली प्रकार समझ लिया था। उस समय इन पति-पत्नी में जिस मित्रता का प्रादुर्भाव हुआ वह उस समय बड़ी ही आश्वासन भरी सिद्ध हुई जब भविष्य में जवाहरलाल पर कठिनाई का अवसर आया। यद्यपि उस संघर्ष में जवाहरलाल नेहरू न केवल घर से बाहर रहा करते थे अपितु महीनों तक उनको जेल यातना भुगतनी पड़ती थी, किन्तु उन दोनों के सम्बन्ध तथा सौहार्द पूर्ण बने रहे।



७

महात्मा गांधी का अनुसरण

महात्मा गांधी के विषय में जवाहरलाल नेहरू का जो अनुमान था वह सत्य सिद्ध हुआ था। तब उन्होंने महात्मा गांधी के प्रत्येक कार्य का अनुकरण करना आरम्भ कर दिया। उन्होंने यह अनुभव किया कि कांग्रेस के और उदारवादी अधिकांश नेता केवल बातें बनाने वाले ही थे। किन्तु यह दुबला-पतला-सा दिखाई देने वाला व्यक्ति कुछ करने वाला था। महात्मा जी सदा कोई ऐसा अवसर खोजते रहते थे कि जब अंग्रेजी सरकार के कु-शासन की आलोचना की जा सके। इसमें सन्देह नहीं कि अंग्रेज लोग अक्सर इस प्रकार के अवसर उत्पन्न कर दिया करते थे। सरकार का जनता से बिल्कुल किसी प्रकार सम्पर्क नहीं रहा था। उसको केवल कुछ चाटुकारों और कुछ अपने ही ब्रिटिश अधिकारियों का आधार था। भारत का बहुसंख्य जन तो ग्रामीण अथवा गंवार, बचकाना, अशिष्ट समझा जाता था, जैसा कि अंग्रेजी लेखक रडयार्ड किपलिंग भारतीयों को कहा करता था।

सरकार को अनुभव होने लगा था कि भारत में चारों ओर विद्रोह उठ रहा है। हो सकता है कि उनको उन गुप्त संगठनों के विषय में भी ज्ञात हो कि जो इस बात पर विश्वास करते थे कि स्वतन्त्रता केवल विद्रोह से ही प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने यह भी अनुभव कर लिया था कि जब जर्मन लोग युद्ध में अंग्रेजों को पीटते थे तो उससे अधिकांश भारतवासी प्रसन्नता अनुभव करते थे। इसलिये जब उन्होंने जर्मनी में कैसर को पराजित कर युद्ध जीत लिया तो उन्होंने अपने साम्राज्य को सम्भावित प्रतिद्वन्द्वी, जैसे कि जर्मनी और राजद्रोहियों, दोनों ही ओर से सुरक्षित करने का निश्चय कर लिया।

उन्होंने 'रौलेट एक्ट' नाम से एक एक्ट लागू किया, जिसके आधार पर चार भारतीय लोग एक स्थान पर एकत्रित नहीं हो सकते थे। इतना ही नहीं, अपितु बिना किसी अपील दलील की सुनवाई के लोगों को जेल भेजने का अधिकार भी उस एक्ट में था।

स्वाभाविक ही इस दमनकारी बिल के कारण अनेक भारतीयों के मन में क्रोध उबल रहा था।

जवाहर लाल सत्याग्रह सभा में

गांधी जी ने सत्याग्रह सभाओं का आयोजन आरम्भ कर दिया था। इसके सदस्य अहिंसा तथा किसी को ठेस न पहुंचाने की शपथ लेते हुए संघर्ष करते थे। इस संस्था के सदस्यों ने यह प्रतिज्ञा की थी कि वे रौलेट एक्ट की धारा को भंग करते हुए स्वेच्छा से स्वयं को बन्दी बनायेंगे। सत्याग्रह का अभिप्राय था 'सत्य को ग्रहण करना' या अपनी अन्तरात्मा के प्रति निष्ठावान रहना। और जब कोई आक्रमण करे तो उस पर प्रत्याक्रमण न करना।

इस प्रकार सरकार के साथ अहिंसा और असहयोग का व्यवहार कर सत्य को ग्रहण करना था। जनता को कहा जाता था कि वे पुलिस की लाठियों और हथकड़ियों को बिना किसी क्रोध के स्वीकार करें।

यह वह कार्य था जिसके लिए जवाहरलाल नेहरू प्रतीक्षा कर रहे थे। रौलेट एक्ट एक प्रकार की चुनौती था। यह एक प्रकार का बल प्रयोग था। गांधी जी चाहते थे कि इस निर्दयता और आतंक के विरुद्ध प्रतीकात्मक विरोध स्वरूप सत्याग्रह का प्रयोग किया जाय।

मोतीलाल नेहरू, जिसने अपने पुत्र को ऐशो आराम का जीवन जीने का अभ्यास कराया था, वे जवाहरलाल नेहरू के जेल जाने के विचार को सहन नहीं कर सके। बन्दी जीवन में किस प्रकार की जिन्दगी जी जाती है इसका अनुभव करने के लिये उन्होंने स्वयं फर्श पर सोने का यत्न किया था। उनको इससे इतनी अप्रसन्नता हुई कि उन्होंने महात्मा गांधी को इस लिये इलाहाबाद बुलवाया कि वे आकर उनके पुत्र को जेल न जाने के लिये मना सकें। 'बापू' जैसा तब तक उनको सभी लोग सम्बोधन करने लगे थे, बुलवाने पर इलाहाबाद आये और मोतीलाल के साथ अपनी मित्रता के आधार पर उन्होंने जवाहरलाल को सत्याग्रह में सम्मिलित न होने का आग्रह भी किया।

किन्तु जब सत्याग्रह का दिन आया तो प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति ने अपनी सुख-सुविधा का कोई विचार किया ही नहीं। उस दिन समस्त भारत में हड़ताल की गई। पुलिस और सेना ने दिल्ली में अनेक लोगों को गोली से उड़ा दिया। अमृतसर में जलियांवाला बाग में, जो कि चारों ओर दीवार से घिरा था, उसमें अपने नेता डा० किचलू और डा० सत्यपाल

के बन्दी बनाये जाने के विरोध में एकत्रित अपार जनसमूह पर जनरल डायर ने गोलियां चलवा दीं। उसके बाद सरकार ने पंजाब में मार्शल ला की घोषणा कर दी। ब्रिटिश गवर्नर सर माइकेल ओ ड्वायर ने निर्दयता और आतंक का वातावरण फैला दिया। पंजाब का शेष भारत से सम्बन्ध विच्छेद-सा हो गया था।

जवाहरलाल की पंजाब यात्रा

जब पंजाब में मार्शल ला उठ गया तो जवाहरलाल नेहरू कलकत्ता के प्रसिद्ध वकील सी० आर० दास को साथ लेकर जलियांवाला बाग की घटना की जांच करने के लिये पंजाब के दौरे पर गये। उन्होंने वहां जाकर वह दुखभरी दास्तान सुनी जिसमें किस निर्दयता से लोगों को, चाहे वे बच्चे हों, कन्यायें हों, बूढ़े नर-नारी हों, उन लोगों को पेट के बल रेंग कर चलने के लिये विवश गया, उन पर बेंतों के निर्मम प्रहार किये गये और उनको दण्डित किया गया।

जांच का कार्य पूरा होने पर वापस आते हुए संयोगवश उन्होंने पाया कि वे उसी रेल के डिब्बे में यात्रा कर रहे हैं जिसमें कि जनरल डायर यात्रा कर रहा था। जब जवाहरलाल नेहरू उस डिब्बे के ऊपर की एक सीट पर लेटे हुए थे। उन्होंने जनरल का वह तीव्र भाषण सुना जो वह अपने अंग्रेज साथी को सुनाते हुए बता रहा था कि वह सारे अमृतसर शहर का सफाया करके एक उदाहरण प्रस्तुत करना चाह रहा था। ऐसा लगता था कि जनरल द्वारा किये गये अत्याचारों की जांच करने के लिए नियुक्त 'हन्टर कमेटी' एक प्रकार से ब्रिटिश सरकार के घड़ियाली आंसू थे।

अपनी पंजाब की जांच की अवधि में जवाहर लाल का महात्मा गांधी के साथ निरन्तर सम्पर्क बना हुआ था। युवा जवाहरलाल को गांधी जी के व्यवहार पर सदा ही आश्चर्य हुआ करता था, इस अवसर पर उनको गांधी जी के विचारों की धूर्तता का भी ज्ञान हुआ। फिर भी उन्होंने उस वृद्ध व्यक्ति के अहिंसक बने रहने के परामर्श को स्वीकार कर लिया था। जवाहरलाल ने कहा कि वह यह तो वचन नहीं देता कि वह कभी भी क्रोधित न होने में सफल हो जायेगा किन्तु फिर भी वह इसके लिये यत्न अवश्य करेगा।

सन् १६१६ में अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर उदारवासियों की अपेक्षा गांधी जी भारत के सर्वोच्च नेता के रूप में उभर गये थे। अगले वर्ष तक भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक 'महात्मा गांधी की जय' का नारा गूंजता सुनाई देने लगा था।

हिन्दू-मुस्लिम एकता

महात्मा गांधी ने यत्न किया कि मुसलमानों के तत्कालीन नेता अली बन्धुओं, मोहम्मद अली और शौकत अली की सहायता को स्वीकार करते हुए, राष्ट्रीय हित में, हिन्दू मुसलमानों में भाईचारा स्थापित हो जाय। टर्की का सुल्तान जो कि इस्लाम का भावी खलीफा होने वाला था, किन्तु प्रथम विश्व युद्ध में उसके द्वारा जर्मन कैसर की सहायता करने के आरोप में जिसको ब्रिटिश शासकों ने पदच्युत कर दिया था, उसकी पुन-र्प्रतिष्ठा के लिए अली बन्धुओं ने एक आन्दोलन आरम्भ कर दिया था।

गांधी जी ने अहिंसात्मक आन्दोलन के उद्घाटन के लिये पहली अगस्त की तिथि निर्धारित कर दी थी। उस दिन बम्बई में लोकमान्य तिलक का निधन हो गया। 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।' के उद्घोष कर्ता के प्रति अपनी श्रद्धा और भक्ति प्रदर्शित करने के लिये उनकी शवयात्रा में गांधी जी और जवाहरलाल के साथ-साथ लाखों करोड़ों लोग सम्मिलित हुए।

८

किसानों की दुर्दशा से विचलित

अब तक जवाहरलाल के विचारों और कार्य में भारतीय होने का गर्व मुख्य था। किन्तु उसका भारतीयता का यह गर्व बार-बार विचलित होता गया। क्योंकि अब कुछ समय से वे उत्तर प्रदेश तथा देश के अन्यान्य भागों के निम्न वर्ग के लोगों, पीड़ित शोषित किसानों के सम्पर्क में आने लगे।

जवाहरलाल नेहरू की माता और उनकी पत्नी कमला का स्वास्थ्य ठीक नहीं था। मई १९२९ में वे उन दोनों को लेकर मसूरी गए। वहां अफगानियों का एक प्रतिनिधि मण्डल ब्रिटिश सरकार से शान्ति पर वार्तालाप करने के लिये आकर सेवोय होटल में ठहरा हुआ था। जब नेहरू मसूरी पहुंचे तो 'सरकार' ने समझा कि यदि किसी प्रकार जवाहरलाल का उनसे सम्पर्क हो गया तो यह अच्छा नहीं होगा। इसलिए देहरादून के जिलाधीश ने आदेश प्रसारित कर दिया कि जवाहरलाल नेहरू चौबीस घण्टे के भीतर देहरादून जिले की परिधि से बाहर हो जायं।

जिलाधीश के इस आदेश पर जवाहरलाल नेहरू ने अप्रसन्नता व्यक्त की किन्तु उनको इलाहाबाद वापस आना पड़ा। यह निष्कासन आदेश उनके लिए छिपा हुआ वरदान सिद्ध हुआ। इलाहाबाद में आकर उन्होंने पाया कि लगभग दो हजार किसान वहां आकर यमुना के किनारे खेमे गाड़ कर बैठे हुए हैं। वे जमींदारों तथा सरकार द्वारा उनको सताये जाने का दुखड़ा सुनाने के लिए जवाहरलाल नेहरू के पास आये। जवाहरलाल नेहरू उनसे मिले और जब उन्होंने उनकी व्यथा-कथा सुनी तो उनको इससे बड़ा दुख पहुंचा।

जैसा कि अधीर होने का उनका स्वभाव था तदनुसार वे दो दिन बाद उनके गांव गए। वहां उन्होंने अपनी आंखों से उनकी दुरवस्था को देखा। उन्होंने देखा कि जिस प्रकार चूहे अपने बिलों में रहते हैं उसी प्रकार किसान लोग भी अपने छोटे-छोटे मिट्टी के झोंपड़ों में रह रहे थे। उनकी धंसी हुई आंखें और पिचके हुए गाल उनकी कहानी सुना रहे थे।

किसान महिलायें चीथड़े पहने हुई थीं। दूध और भरपेट भोजन के अभाव में उनके बच्चे सूखकर कांटा हो गये थे। नेहरू ने किसानों को उनके विरुद्ध संगठित होकर संघर्ष करने के लिए उत्साहित किया जो उनको सता रहे थे। किसानों ने प्रण किया कि वे राष्ट्रीय संघर्ष में सम्मिलित होंगे। जब से नेहरू योरोप से भारत लौटे थे तब से अपने जीवन में आज पहली बार उन्होंने यह अनुभव किया कि वे जनसाधारण का ही एक अंग हैं। भाषण देने में उनका शर्मीलापन अब समाप्त हो गया था और उन्होंने जन सभाओं में भाषण देना आरंभ कर दिया था। वे किसानों से प्यार करते थे और किसान उनको प्यार करते थे। इस प्रकार उनमें आत्मीयता का नाता स्थापित हो गया था।

९

पिता भी पुत्र की राह पर

जन साधारण के दुख दर्द के प्रभाव ने जवाहरलाल नेहरू को घर से और भी अधिक दूर धकेल दिया था। सन् १९२० में कलकत्ता में कांग्रेस के विशेष अधिवेशन का आयोजन किया गया। उन अधिवेशन में गांधी जी ने सरकार के साथ असहयोग का प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

लाला लाजपतराय और सी० आर० दास जैसे उदारवादियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। वे चाहते थे कि सरकार ने जिस मोन्टेगू-चेम्सफोर्ड सुधारों की घोषणा की है तदनुसार कांग्रेस को नई विधान सभा में घुस जाना चाहिये।

मोतीलाल नेहरू अपने मस्तिष्क में अस्पष्ट होने से कुछ निर्णय नहीं कर पा रहे थे। वे समझते थे कि असहयोग का अभिप्राय है उनको अपनी वकालत और ऐशो-आराम की जिन्दगी छोड़नी होगी, किन्तु साथ ही असाधारण व्यक्तित्व के नाते वे गांधी जी की ओर भी आकृष्ट होते जा रहे थे।

अपने संघर्ष के प्रति जवाहरलाल की निष्ठा और गांधी जी में उनकी श्रद्धा ने मोतीलाल के जीवन को परिवर्तित कर दिया। अन्त में उन्होंने निश्चय कर ही लिया और सब सुख सुविधाओं को त्याग कर खादी धारण कर ली।

अब स्वतंत्रता संघर्ष नये प्रकार के बुद्धिशील विभिन्न समुदायों से आये, जिनको गांधी जी ने अपने चारों ओर एकत्रित कर लिया था ऐसे वकील, डाक्टर और अध्यापकों जैसे अनुभवी हाथों में पहुंच गया था।

१०

प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत यात्रा

जब सन् १६२१ में सामान्य रूप में असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ तो ब्रिटिश सरकार ने उसकी अपेक्षा का यत्न किया। सरकार का यह विचार था कि भारतीयों को राजा और नवाबों से बड़ा लगाव है। इस लिये उन्होंने प्रिंस ऑफ वेल्स को भारत आने का निमन्त्रण दिया। लोगों ने उसके स्वागत समारोह का बहिष्कार करना आरम्भ कर दिया। तब सरकार ने आन्दोलन के नेताओं को बन्दी बनाना आरम्भ कर दिया।

सन् १६२१ के दिसम्बर के आरम्भ में जब प्रिंस युनाइटड प्रौविंस—आज का उत्तर प्रदेश—गया तो सारे प्रदेश में उस दिन हड़ताल हो गई।

जवाहरलाल बन्दो

अचानक पुलिस जवाहरलाल नेहरू के घर पर आ धमकी और उनको बन्दी बना लिया। उस युवा नेता के लिये अपने भावी जेल जीवन के लम्बे क्रम में से यह पहला जेल जाना था।

महात्मा गांधी अभी तक जेल से बाहर ही थे। किन्तु मोतीलाल को पकड़ लिया गया था। गांधी जी लोगों को दिन-प्रतिदिन का परामर्श देते रहे और जनता से कहते रहे कि वे सरकार के साथ सहयोग न करें। सरकार ने हजारों लोगों को पकड़ लिया था। जन जीवन में एक प्रकार से पूर्ण स्थिरता आ गई थी।

दुर्भाग्य की बात यह हो गई कि किसानों के एक समूह ने 'चोरी चोरा' गांव के निकट पर बने पुलिस थाने को आग लगा दी थी। उस समय आधे दर्जन के लगभग पुलिस वाले थाने के भीतर होंगे, वे सब जल गए। गांधी जी ने देखा कि यह आन्दोलन अब हिंसक होने लगा है, अतः उन्होंने अपना असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया।

तीन मास तक जवाहरलाल को जेल के भीतर बन्द रखने के बाद सरकार को विदित हुआ कि जवाहरलाल पर जो आरोप लगाये गये हैं वे तो बड़े ही कमजोर हैं । इस लिए उन्होंने उनको जेल से मुक्त कर दिया, किन्तु मोतीलाल को नहीं छोड़ा ।

१९२२ का अभियोग

जेल से छूटने के तुरन्त बाद जवाहरलाल ने गांधी जी के पास उनके अहमदाबाद जिले के साबरमती नदी तट पर स्थित आश्रम में जाने का निश्चय किया । किन्तु उनके वहां पहुंचने से पहले ही गांधी जी को राजद्रोह पूर्ण लेख लिखने के आरोप में बन्दी बना लिया था । जब गांधी जी पर अभियोग चलने लगा तो जवाहरलाल उस समय न्यायालय में उपस्थित रहे । गांधी जी पर लगाये गए आरोपों के उत्तर में जो शव्द गांधी जी ने कहे उनका जवाहरलाल पर बड़ा प्रभाव पड़ा । गांधी जी ने ऐसे लेख, जिनमें जनता से सरकार का आदेश न मानने की बात कही गई थी, लिखना स्वीकार किया । उनको छः मास का कारावास का दण्ड दिया गया । किन्तु गांधी जी के सत्यभाषण पर न्यायाधीश नतमस्तक हो गया था ।

वहां से इलाहाबाद लौटने के थोड़े दिन बाद ही जवाहरलाल को फिर बन्दी बना लिया गया । उन पर आरोप था कि उन्होंने उन दुकानों के आगे धरना दिया था जो विदेशी कपड़ा बेच रहे थे । इस आरोप में अठारह मास का कारावास का दण्ड मिला ।

गांधी जी ने जनता को परामर्श दिया कि सूत कात कर अपने परिवार के लिए कपड़ा तैयार करें । इससे उनका अभिप्राय था कि कपड़े के विषय में जनता आत्मनिर्भर हो जायेगी और बाहर से विदेशी कपड़ा भी नहीं मंगवाना पड़ेगा ।



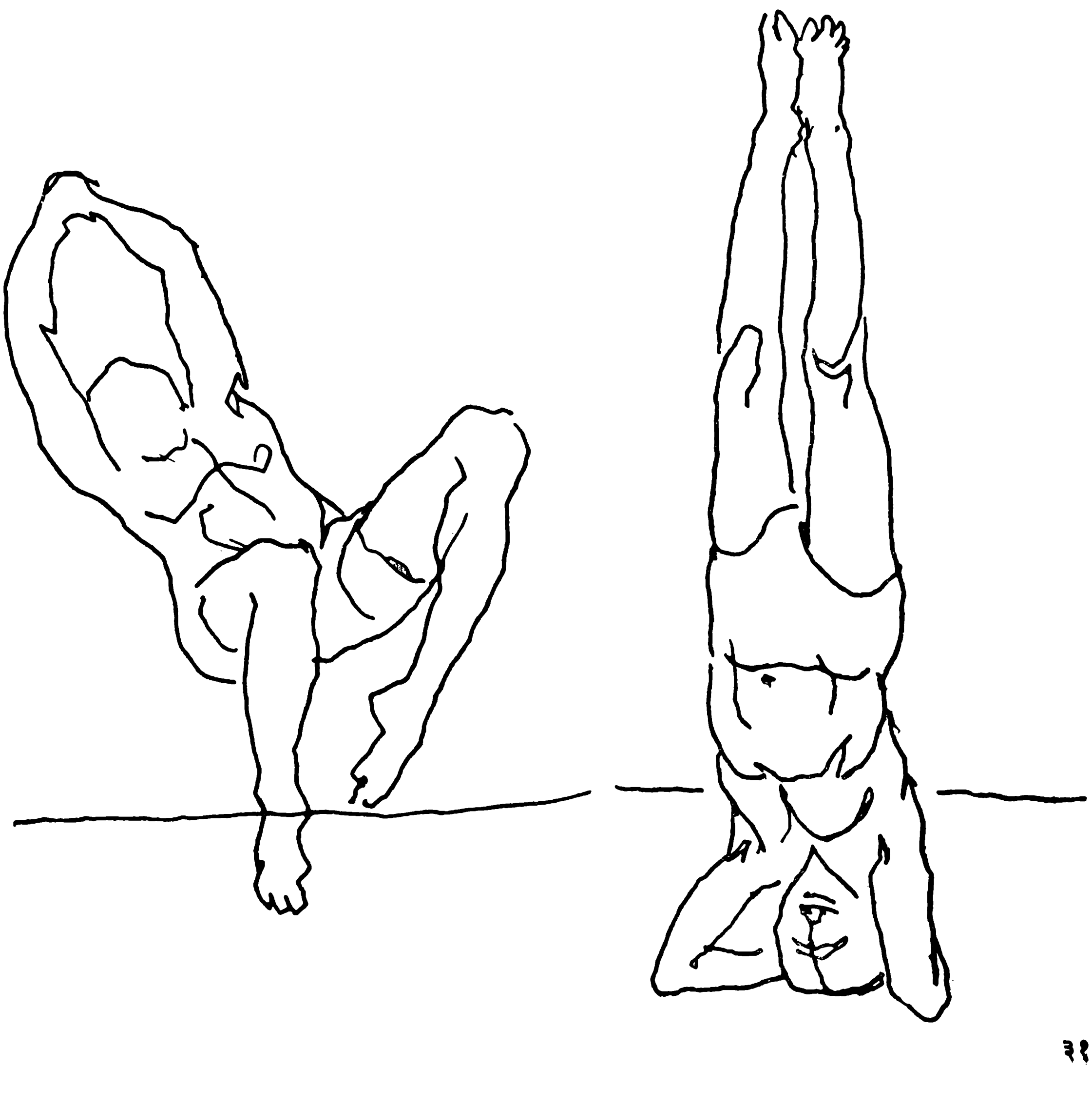
११

जेल में लेखन कार्य

जवाहरलाल को अब यह भली प्रकार विदित हो गया था कि उनको बार-बार जेल की यात्रा करनी पड़ेगी। इसलिये जेल में रहते हुए उन्होंने अपने समय का विभिन्न प्रकार के कार्यों में उपयोग करने का निश्चय किया। वहां रहते हुए उन्होंने बागवानी आरम्भ की और उस विषय की पुस्तकें पढ़ना आरम्भ किया। वे घंटों बैठकर आकाश में बनने मिटने वाले बादलों को निहारा करते थे। वहीं उन्होंने शारीरिक व्यायाम करना भी आरम्भ कर दिया। वे तथा उनके अन्य जेल के कुछ साथी जेल के कुएं से बैलों की भांति

पानी खींचने का काम भी करने लगे। रात्रि के समय वे तारों को देखते रहते थे। उन्होंने लेखन कार्य आरम्भ किया और नियमित रूप से अपनी बेटी इंदिरा को, जो उस समय छोटी ही थी, पत्र लिखने लगे। बाद में यही पत्र उनकी प्रथम पुस्तकों के रूप में 'पिता के पत्र पुत्री के नाम' तथा 'विश्व इतिहास की झलक' शीर्षक से प्रकाशित हुईं।

वास्तव में वे उन सब चीजों में रुचि लेने लगे जिसके विषय में वे समझते थे कि मनुष्य यदि पूर्ण जीवन जीना चाहता है तो उसको यह सब जानना चाहिये। किन्तु इतना सब होते हुए भी जेल में किसी नारी का स्वर न सुनाई देना, बच्चों की किलकारी का अभाव, यहां तक कि कुत्तों का भूंकना भी न सुनाई देना, ऐसे दुःखद क्षण थे। वास्तव में अपने प्रियों के बिना कोई व्यक्ति पूर्ण जीवन किस प्रकार जी सकता है।



१२

मन्त्रित्व अस्वीकार करना

इस बार जब वह जेल से बाहर आये तो एक आश्चर्यजनक घटना उनकी प्रतीक्षा कर रही थी ।

उस समय के इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश सर ग्रिमवुड मायर्स उनसे मिलने के लिए आये । बातों-बातों में उन्होंने जवाहरलाल नेहरू को नये सुधारों के अन्तर्गत शिक्षा मन्त्री बनने के लिये आग्रह किया । जवाहरलाल यह भली भांति जानते थे कि मंत्रिमण्डल में जो अन्य मंत्री थे उनमें से अधिकांश बड़े-बड़े जमींदार और उदारवादी थे । वे केवल अंग्रेज अफसरों को गार्डन पार्टी देने के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं जानते थे । किन्तु जवाहरलाल को यह सब पसन्द नहीं था ।

इस दौरान 'सरकार' के विरुद्ध संघर्ष अपना मार्ग स्वयं ही बनाता जा रहा था ।

उनके पिता मोतीलाल नेहरू और सी० आर० दास द्वारा स्थापित स्वराज पार्टी, जो कि 'सरकार' के साथ सहयोग करने में विश्वास करती थी, उसने केन्द्रीय संविधान सभा के निर्वाचनों में भाग लिया था और जीती भी थी । मोतीलाल नेहरू और सी० आर० दास दोनों ही वकील थे और उनका विश्वास था कि वह सरकार में रहकर भीतर से ब्रिटिश सरकार को खोखली कर सकते हैं । किन्तु संविधान सभा तो मात्र एक दिखावे की सभा थी, जिसका कार्य केवल परामर्श देने तक ही सीमित था ।

कांग्रेस का मन्त्रित्व

दिसम्बर १९२३ में काकीनाड़ा : दक्षिण भारत : में जो कांग्रेस का अधिवेशन हुआ था उसमें उन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस का मंत्री बनना स्वीकार कर लिया । मौलाना मोहम्मद अली उसके अध्यक्ष थे ।

'सरकार' ने अपनी 'फूट डालो और राज करो' की दुर्नीति का पालन करना आरम्भ कर दिया । उन्होंने हर अवसर पर हिन्दुओं और मुसलमानों में फूट डालने का

काम आरम्भ कर दिया । उन्होंने उन भारतीयों को अधिकार दिये जो इसके लिए लालायित थे । और उन्होंने कांग्रेस के नेताओं के पीछे अपने गुप्तचर लगा दिये ।

गांधी जी अपने संघर्ष के लिये नये रास्ते के विषय में विचार करने लगे थे । उनका अभी भी विश्वास था कि असहयोग ही एक मात्र उपाय है। किन्तु वे चाहते थे कि उन्हें सफलता का आश्वासन मिलना चाहिये । किन्तु उनकी पद्धति बड़ी विचित्र थी । उदाहरणार्थ



कांग्रेस की सदस्यता के लिए उन्होंने सूत कातना अनिवार्य योग्यता घोषित कर दिया था। वे अनुशासनबद्ध कार्य करना चाहते थे।

गांधी जी की पद्धति से मतभेद

जवाहरलाल को इस प्रकार की पद्धति बिलकुल पसन्द नहीं थी। उनको अनेक बार महात्मा गांधी को समझने में बड़ी कठिनाई होती थी उस अवस्था में वे महात्मा जी के साथ बड़े असहिष्णु बन जाते थे। उन्होंने इंग्लैंड में जो शिक्षा पाई थी वह उनको प्रत्येक बात पर 'ऐसा क्यों' पूछने के लिये बाध्य करती थी। किन्तु गांधी जी भारतीयों की पद्धति से भली भांति परिचित थे। उन्होंने यह अनुभव किया कि 'सरकार' ने उनको अशिक्षित बनाये रखा है। इसलिये वे सदा कोई प्रतीकात्मक आन्दोलन करने के लिए आग्रह करते थे, सूत कातना उनमें से एक था, जिसे लोग समझ भी सकते हैं और उसे करने में उनको कोई असुविधा भी नहीं होगी, उससे उनका चरित्र भी बनेगा।

इस प्रकार गुरु और शिष्य में नये संघर्ष को चालू करने के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क होता रहता था।

मोतीलाल नेहरू उन दोनों के तर्कों को समझने का यत्न करते थे।

इन दिनों उन सबके पास बहुत कुछ करने को था। वे हमेशा दौरों पर ही रहा करते थे। इन दौरों में वे हिन्दू-मुस्लिम एकता का उपदेश दिया करते थे। वे कांग्रेस संगठन को सुदृढ़ करते, लोगों को संघर्ष के लिये प्रेरित करते और यह भी बताते कि यदि आवश्यकता पड़े तो इसके लिये जेल जाने को भी उद्यत रहें।

इसका अभिप्राय यह था कि जीवन की सुख-सुविधाओं से दूर रहना।

सन् १९२५ की शरद ऋतु में कमला नेहरू के फेफड़ों में कुछ गड़बड़ होने लगी। डाक्टरों ने परामर्श किया कि उनको चिकित्सा के लिये स्विटजरलैंड ले जाना चाहिए।

नेहरू परिवार स्विटजरलैंड में

जवाहरलाल नेहरू ने अनुभव किया कि इस अवसर पर उन्हें अपनी पत्नी के साथ होना चाहिए। मार्च १९२६ के प्रारम्भिक दिनों में उनकी पत्नी और पुत्री इन्दिरा जहाज

द्वारा योरोप के लिये चल दिए।

बाद में जवाहरलाल ने बताया कि वे उस समय देश से बाहर चले गये तो यह अच्छा ही हुआ : "मेरा मस्तिष्क धुंधला-सा हो गया था और मुझे कोई मार्ग सूझ नहीं रहा था। मैंने सोचा कि यदि मैं कुछ समय के लिये भारत से दूर रहूं तो मैं स्थिति को भली प्रकार समझ पाऊंगा और इससे मेरा मस्तिष्क भी शांत होगा...।"

१३

योरोप आने पर जवाहरलाल ने अनुभव किया कि यहां आकर उन्होंने ठीक ही किया है । उनकी बहिन स्वरूप और उनके पति रंजीत पंडित भी वहां पहुंच गए । बाद में उनकी छोटी बहिन कृष्णा भी उनके साथ रहने के लिए आ गई थी । आखिरकार, थोड़े समय के लिए ही सही उनको पारिवारिक जीवन का आनन्द लेने का अवसर मिल ही गया ।

जब कमला का स्वास्थ्य कुछ अच्छा हुआ तो वे जिनेवा और उसके आस-पास के अपने पुराने मित्रों के पास जाने का विचार करने लगे । जाड़ों में उन्होंने स्कीइंग सीखी । यह यद्यपि जोखिम भरा कार्य था किन्तु खेलों के मामले में तो वे बिलकुल ही युवक जैसे थे । वे हमेशा चपल और स्वस्थ रहना पसन्द करते थे ।

श्यामजी कृष्ण वर्मा से भेंट

जवाहरलाल को योरोप में भारत से निष्कासित कुछ लोग मिले । किन्तु वे लोग तो बहुत दिनों से अपने घर से बाहर थे । वे भारतीय वातावरण से सर्वथा अलग-थलग से थे ।

उदाहरण के लिए श्यामजी कृष्ण वर्मा, 'इंडियन सोशियोलोजिस्ट' के रूप में जिनकी ख्याति थी, वे इंग्लैंड में रहते हुए वहां के अपने सभी भारतीय साथियों से लड़-लड़ा कर जिनेवा में रहने लगे थे । उनके पास केवल एक ही कमरा था और वह भी सारा किताबों से ही भरा पड़ा था । उनको आशा थी कि वहां रहते हुए, जोरदार शब्दों में लिख-लिख कर वे भारत में क्रान्ति को चलाये रखने में सफल होंगे ।

राजा महेन्द्र प्रताप

राजा महेन्द्र प्रताप भी वहीं थे । जैसा कि जवाहरलाल ने लिखा है : "उनका

पहिनावा बड़ा ही विचित्र होता था। जो आधा सैनिकों जैसा लगता था और जिनकी जेबें कागजों से भरी रहती थीं।" उन्होंने जवाहरलाल को बताया कि एक बार चीन में उनका सूटकेस खो गया। तब से उन्होंने निश्चय लिया कि वे अपने कागजात अब अपनी जेब में ही रखेंगे। उन्होंने उन्हीं दिनों 'हैप्पीनैस सोसाइटी' की स्थापना की थी और स्वयं को वे 'सर्वेंट आफ मैनकाइंड' अर्थात् मनुष्य-मात्र का सेवक कहा करते थे।

मैडम कामा

उन दिनों मैडम कामा पेरिस में थीं, वे बड़ी ही क्रूर और डरावनी-सी लगती थीं। फ्रांसवासियों को वे कहा करती थीं कि सन् १७८९ की फ्रांस की क्रान्ति के स्वतंत्रता, समता और भाईचारे के आदर्श को सदा स्मरण रखें और वे अंग्रेजों से अपेक्षा करती थीं कि वे इन आदर्शों को भारत में लागू करें।

अन्यान्य भारतीय

फिर बर्लिन में भी कुछ भारतीय थे। जिन्होंने इंग्लैंड के विरुद्ध युद्ध में जर्मनी की सहायता की थी। वे थे—पिल्लई, वीरेन्द्र चट्टोपाध्याय (जो सरोजिनी नायडू का छोटा भाई था) एम० एन० राय, धन गोपाल मुखर्जी। पहले व्यक्ति का नाम बिलकुल जर्मन जैसा रखा गया। "चट्टो' मास्को चला गया और बाद में स्टालिन ने उसको जेल भिजवा दिया। रौय, जो कि लेनिन का मित्र था, उसकी स्टालिन के साथ लड़ाई हो गई। मुखर्जी बेचारा भावुक बंगाली था जिसने अमेरिका में जाकर पुस्तकें लिखीं और तत्वज्ञान पर भाषण दिये। वे करनी की अपेक्षा कथनी में ही अधिक विश्वास करते थे।

जवाहरलाल की महान् फ्रेंच लेखक रोमां रोलां से भी भेंट हुई। इसके साथ ही जर्मन नाटककार अर्नेस्ट टोलर तथा अन्यान्य भारत-मित्रों से भी उनकी भेंट हुई।

इस प्रकार इतने लोगों से भेंट होने के उपरान्त जवाहरलाल नेहरू ने अनुभव किया कि उनकी योरोप यात्रा उपयोगी रही। संसार बदल रहा था। सबसे पहली बात यह थी कि उनको सोवियत रूस में विशिष्ट क्रान्ति की झलक मिली, इसके बावजूद कि सोवियत नेताओं ने नये रूस के निर्माण के लिए बहुत कुछ किया था। दूसरी ओर पाश्चात्य शक्तियों के क्रिया कलाप और व्यवहार अपने साम्राज्य से लिपटे रहने की उनकी लालसा से उनको बड़ी निराशा भी हुई थी।

फरवरी १९२७ में जब जवाहरलाल नेहरू दमित राष्ट्रों के अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए ब्रसल्स गए तो उन्हें इनकी प्रामाणिकता का पता चला ।

शोषित राष्ट्रों का सम्मेलन

ब्रसल्स के अधिवेशन में उनकी ज्योर्ज लैंसबरी जो उस समय के ब्रिटिश मजदूर आन्दोलन के वृद्ध और एकमात्र जीवित व्यक्ति थे और जो नेहरू के मित्र बन गए थे और अपने अवशिष्ट जीवन में जो भारत की स्वतंत्रता के लिए काम करने को तैयार हो गए थे; मैडम सनयात सेन, जो चीन के महानतम नेता की विधवा पत्नी थी और जिसने जवाहरलाल नेहरू को चीन की जनता की आशाओं के बारे में बताया था, उत्तर वियतनाम के हो ची मिन्ह, जिसने फ्रांसीसी साम्राज्यवाद के विरुद्ध दक्षिण पूर्व एशिया में चल रहे स्वतंत्रता संघर्ष के विषय में नेहरू की बात की; आदि अनेक नेताओं से भेंट और वार्तालाप हुआ । सोवियत यूनियन के नेताओं ने भी नेहरू को बहुत प्रभावित किया ।

किन्तु नेहरू समझते थे कि उन संस्थाओं के लोग जो समस्त विश्व के हित की बात सोचते हैं, जब भारत में आयें तो वहां वे हिंसा की बात न करें । उनको गांधी जी की अहिंसा की कार्य पद्धति में अधिक विश्वास हो गया था ।

उन्होंने यह भी अनुभव किया कि अधिकांश पश्चिमी देशों की सरकारें अच्छी सरकारें नहीं हैं । अंग्रेजों को तो जाना ही चाहिये । भारत की दुर्दशा का अन्त होना ही चाहिये ।

पिता पुत्र की सोवियत यात्रा

कुछ मास बाद मोतीलाल नेहरू भी योरोप आ गये और वहां से अपने पुत्र के साथ बहुत थोड़े समय के लिये वे रूस भी गये । पिता और पुत्र दोनों रूस द्वारा की गई उस प्रगति से बड़े प्रभावित हुए जो उसने क्रान्ति के बाद इन थोड़े से वर्षों में कर ली थी ।

जवाहरलाल नेहरू अपने मित्रों को पत्रों में नये रूस के विषय में लिखा करते थे, जिनमें वे वहां ऐसे समाज के उदय की प्रशंसा किया करते थे जो भारतीयों के कष्टों में सहभागी बनने वाला था ।

१४

सरकार का दुश्चक्र

लगभग दो वर्ष बाद जब जवाहरलाल नेहरू योरोप की यात्रा से भारत लौटे तो उन्होंने देखा कि 'सरकार' अपना और अधिक भ्रमजाल फैलाने में सफल हो गई है । हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य और अधिक दृढ़ हो गया था । पंडित मदन मोहन मालवीय द्वारा स्थापित कुछ राष्ट्रीय दल, जो मुख्यतया हिन्दू दल के रूप में कार्य कर रहे थे, मोतीलाल नेहरू द्वारा स्थापित स्वराज पार्टी के कुछ सदस्यों को अपनी ओर ले गये थे । गांधी जी अपना अधिकांश समय खादी के उत्पादन और अछूतोद्धार में लगा रहे थे ।

मद्रास अधिवेशन

दिसम्बर १९२७ में मद्रास में सम्पन्न कांग्रेस अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरू ने इस बात पर बल दिया कि स्वतंत्रता संग्राम के विषय में स्पष्ट विचारों का प्रसार किया जाना चाहिये । साम्राज्यवाद के विरुद्ध किये जाने वाले संघर्ष में जवाहरलाल नेहरू चाहते थे कि मुस्लिम लीग से सहयोग लिया जाय । वे यह भी चाहते थे कि कांग्रेस सिद्धान्त रूप में यह स्वीकार कर ले कि स्वतन्त्रता के उपरान्त सब नागरिकों को सुअवसर का समान अधिकार होगा । एक व्यक्ति को एक वोट देने का अधिकार होगा । ऐसा समाज बनाया जाय जहां जिसमें सब बराबर हों, कोई छोटा बड़ा न हो, कोई ज्यादा गरीब और कोई ज्यादा अमीर न हो ।

उस समय गांधी जी ने अनुभव किया कि जवाहरलाल नेहरू बहुत अधिक तेज दौड़ने लगे हैं । कोई बात नहीं, मद्रास अधिवेशन में क्योंकि साइमन कमीशन का बहिष्कार करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया था, इससे गांधी जी को प्रसन्नता हुई । उन्होंने इसका स्वागत किया । अंग्रेज सरकार ने इस आयोग की नियुक्ति इसलिये की थी कि जिससे यह और अधिक सुधारों का सुझाव दे सके ।

मजदूर यूनियन का अध्यक्षत्व

जब दो वर्ष तक उदारवादी और राष्ट्रवादी नेता किसी प्रकार का कोई निश्चयात्मक मार्ग नहीं सुझा सके तो उस समय जवाहरलाल तथा अन्यन्य युवक नेता इस दिशा में कुछ अधिक स्पष्ट होते जा रहे थे। उन्होंने यह अनुभव किया कि बड़ों की पीढ़ी उन लोगों के अधिक पक्ष में है जो सुख सुविधा सम्पन्न हैं। इसलिये जब १९२८ में अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने उनको अपना अध्यक्ष चुन लिया तो उन्होंने इस पद को स्वीकार कर लिया।

कमीशन विरोधियों पर लाठी चार्ज

बारदोली में सरदार वल्लभभाई पटेल और गुजरात के किसानों द्वारा 'सरकार' द्वारा लगाये गये भारी टैक्सों के विरोध में किये गये आन्दोलन की विजय का जवाहरलाल नेहरू ने स्वागत किया।

इसी दौरान 'साइमन वापस जाओ' का नारा सारे देश में गूंजने लगा था। अंग्रेज सरकार ने लॉर्ड साइमन को भारत इसलिये भेजा था कि वह वहां के विषय में अपनी जांच से अवगत करायें। किन्तु जहां-जहां साइमन कमीशन का भीड़ ने काले झण्डों से स्वागत किया वहां-वहां भीड़ पर पुलिस ने लाठियां बरसाईं।

लाला लाजपतराय पर प्रहार

लाहौर में लाला लाजपतराय, जो कि पंजाब के सर्वप्रिय नेता थे इस अवसर पर उन पर एक अंग्रेज पुलिस अधिकारी ने बन्दूक के कुन्दे से प्रहार कर दिया।

स्वयं जवाहरलाल नेहरू पर, जब वे लखनऊ में एक जनसभा को सम्बोधित करने के लिये जा रहे थे तो घुड़सवार पुलिस ने उन पर आक्रमण कर दिया। उस अवसर पर जब वे साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे थे तो उन पर अनेक प्रहार किये गये।

यद्यपि प्रौढ़ कांग्रेसी नेताओं ने ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया। किन्तु लाहौर के युवक देशभक्त सरदार भगतसिंह ने उस पुलिस अधिकारी की हत्या कर दी जिसने लाला लाजपत राय पर प्रहार किया था। बंगाल में भी जो आतंकवादी गांधी जी के अहिंसा के विचार का समर्थन नहीं करते थे उन्होंने वहां खूब बम चलाये। 'सरकार' जब आतंकवादियों को नहीं पकड़ सकी तो उन्होंने बम्बई के मजदूर नेताओं को बन्दी बनाना आरम्भ कर


साइमन वापिस जाओ
साइमन वापिस जाओ



दिया। सरकार ने उन पर ब्रिटिश सरकार को बलपूर्वक पदच्युत करने के षड्यन्त्र का आरोप लगाया।

मेरठ षड्यन्त्र

उसी समय मेरठ षड्यन्त्र के अपराधी शरारती कम्युनिस्टों पर यह अभियोग कि उन्होंने ट्रेड यूनियन बनाने की योजना बनाई थी, आरम्भ हुआ। मोतीलाल नेहरू उनकी ओर से बिना फीस लिए पैरवी करने के लिए वकील के नाते मेरठ गए।

सम्मिलित अधिवेशन

सन् १९२८ में बम्बई में सर्वदलीय अधिवेशन का आयोजन किया गया। उसमें एक समिति का गठन किया गया जिसमें मोतीलाल नेहरू को उसका संविधान बनाने का कार्य सौंपा गया। इस अधिवेशन में प्रभुसत्तात्मक राज्य का प्रस्ताव पारित किया गया। अधिवेशन का अभिप्राय था कि भारत भी कनाडा, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड की भांति साम्राज्य के भीतर रहता हुआ प्रभुसत्तात्मक राज्य बन जाय। उसी अधिवेशन में यह भी निश्चय किया गया कि अवध के बड़े-बड़े जमींदार स्वतंत्रता के बाद भी अपनी बड़ी-बड़ी जमींदारी अपने पास रख सकें।

जवाहरलाल उनमें से बहुत से बड़े-बड़े जमींदारों को जानते थे। वे जमींदार स्वयं तो बड़े-बड़े नगरों में रहते थे और उनके आदमी उनकी जमींदारी में घूम कर उनसे कर उगाहा करते थे।

जवाहरलाल नेहरू को इन जमींदारों और उदारवादियों से घृणा थी, इसलिये वह कोई नया ही कार्यक्रम बनाना चाहते थे।

जवाहरलाल नेहरू इसके लिये गांधीजी का मार्ग निर्देशन चाहते थे किन्तु वे तो एकता, अहिंसा, अछूतोद्धार, नशाबन्दी और विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार जैसे कामों का प्रसार करने में व्यस्त थे।

कलकत्ता कांग्रेस के मतभेद

दिसम्बर १९२८ को कलकत्ता कांग्रेस में मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल में मतभेद हो गया। पिता ने प्रभुसत्तात्मक राज्य का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। पुत्र ने इस

प्रस्ताव का विरोध किया। अपने पिता के साथ किसी प्रकार के भी मतभेद से जवाहरलाल नेहरू को बड़ा कष्ट होता था। किन्तु उनमें इतना साहस था कि सिद्धान्त के विषय पर वे अपने पिता से मतभेद को प्रकट कर सकते थे। बाद में उन दोनों ने परस्पर समझौता कर लिया। यदि 'सरकार' एक वर्ष के भीतर भारत को प्रभुसत्तात्मक राज्य प्रदान नहीं करती तो फिर कांग्रेस पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करेगी।

लॉर्ड इरविन की सहानुभूति

तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन कांग्रेस के प्रमुसत्तात्मक राज्य के उद्देश्य से सहमत थे। किन्तु उन्होंने भारतीय नेताओं से कहा कि वे लन्दन की गोल मेज कांफ्रेंस में भाग लें।

कांग्रेस के नेताओं ने कहा कि वे लन्दन जाने की बात पर विचार कर सकते हैं, यदि सरकार इस प्रकार का कोई संकेत दे कि उसने प्रभुसत्तात्मक राज्य तो स्वीकार कर ही लिया है। उन्होंने राजनीतिक बन्दियों की रिहाई की भी मांग की। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि उस कांफ्रेंस में भारत के प्रतिनिधित्व के लिये केवल कांग्रेस के लोगों को ही लिया जायेगा।

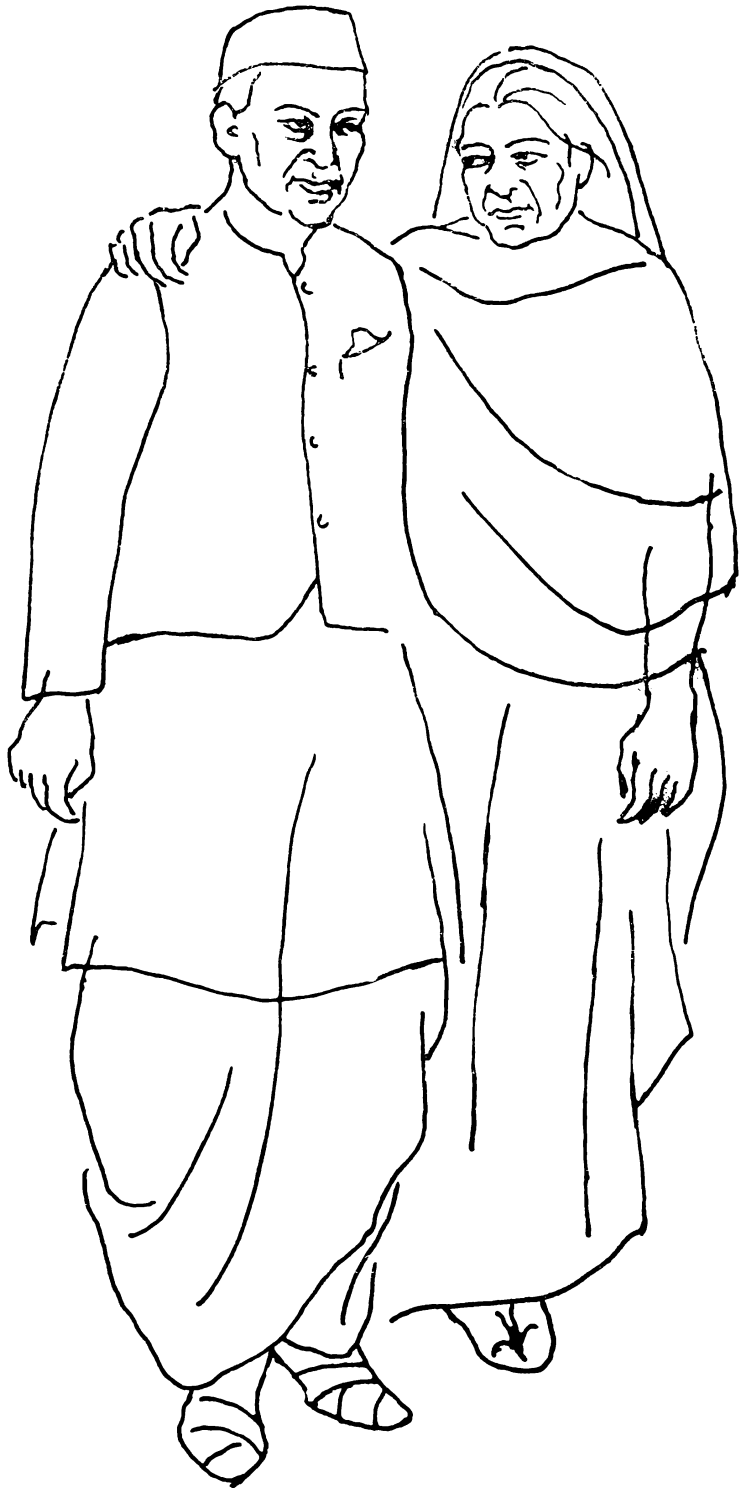
जवाहरलाल नेहरू को इस प्रकार की सौदेबाजी पसन्द नहीं थी। वे समझते थे कि स्वतन्त्रता का तत्व सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

सरकार की अस्वीकृति

लॉर्ड इरविन ने गांधी जी, मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, मोहम्मद अली जिन्ना, सरदार पटेल और मुक्ति नेता सप्रू को २३ दिसम्बर १९२९ को दिल्ली में मिलने के लिये कहा।

इसी बीच पंजाब के आतंकवादियों ने उस रेल की पटरी पर बम रख दिया जिससे वायसराय की रेल को क्षति पहुंची। लॉर्ड इरविन को कोई चोट नहीं आई। किन्तु जब वह निर्धारित समय पर दिल्ली में भारतीय नेताओं से मिला तो उसने कह दिया कि लन्दन कांफ्रेंस में प्रभुसत्तात्मक राज्य के आधार पर वार्तालाप को वह स्वीकार नहीं करता। लॉर्ड इरविन बड़े नम्र स्वभाव का व्यक्ति था। किन्तु इंग्लैंड की महामहिम की सरकार ने उनको निर्देश दिया हुआ था कि वे तनिक सख्तो का रुख अपनाये रहें। 'सरकार' भारत को प्रभुसत्तात्मक राज्य देने के पक्ष में नहीं थी।

जवाहरलाल इस प्रस्ताव पर विचार करने के लिये अपने घर को चले गये।





१५

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर

३० दिसम्बर १९३० को लाहौर में रावी के तट पर जो दृश्य था वह बिल्कुल ही विचित्र था।

जवाहरलाल नेहरू सफेद घोड़े पर सवार होकर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच की ओर अग्रसर हो रहे थे। बहुत वर्षों बाद यह पहला अवसर था जब चालीस वर्ष की युवा आयु का एक व्यक्ति कांग्रेस का अध्यक्ष बना था। इससे पहले उनके पिता कांग्रेस के अध्यक्ष थे। इतने बड़े पद पर एक कम आयु के व्यक्ति को प्रतिष्ठित करना उसके प्रति बहुत बड़ा सम्मान व्यक्त करना था। उस अवसर पर उन्होंने देश के नौजवानों के नाम जो सन्देश दिया उससे उन्होंने उस सम्मान की मर्यादा को बढ़ाया ही था।

अपनी परी कथाओं जैसे भाषण में उन्होंने 'पूर्ण स्वराज' का प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा : "हमारे लिये स्वतन्त्रता का अर्थ है ब्रिटिश राज और साम्राज्य से पूर्णतया स्वतन्त्र होना।" उन्होंने भारत के लिये ऐसे गणराज्य की कामना की, जिसमें सब मनुष्य समान रूप से समाज में सब कुछ के भागीदार बनें।

उन्होंने देश को संघर्ष करने के लिये तैयार रहने को कहते हुए बताया : "सफलता उन लोगों को मिलती है जो उसको प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध होते हैं। जो परिणामों से भयभीत होकर कार्य करने से कतराते हैं वे कभी सफल नहीं होते। हम उच्चादर्शों के लिये मरते हैं। यदि हम चाहते हैं कि हमें बड़ी वस्तु प्राप्त हो तो वह तभी प्राप्त हो सकती है जब हम स्वयं को भयंकर संकट में डालें।"

जवाहरलाल का यह भाषण उनके साहस का प्रतीक था और कांग्रेस के इतिहास में वह बड़ा महत्त्वपूर्ण माना जाने लगा। उन्होंने कहा था : "इसकी पृष्ठभूमि में देश का स्वाभिमान था।" कदाचित इसके द्वारा वे देश के युवकों के विचारों का ही अभिव्यक्तिकरण कर रहे थे। और उन्होंने यह अनुभव किया था कि भारत के लोग स्वतन्त्रता के लिये अधीर हो रहे हैं।

३१ दिसम्बर १६२६ की अर्द्धरात्रि में इस प्रकार भारत ने 'स्वराज्य' के लिये नये संघर्ष का आह्वान किया था। यह 'पूर्ण स्वराज्य' जैसी कोई बात नहीं थी। नव वर्ष के प्रभात का स्वागत 'क्रान्ति अमर रहे' के घोषों से होने लगा। जब कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने यह शपथ ली उस समय देश का युवा वर्ग उत्साह से भरा हुआ था।

पूर्ण स्वतन्त्रता की घोषणा

१६२६ के अधिवेशन में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने शपथ ली : "हमारा विश्वास है कि भारतवासियों का यह निर्विवाद अधिकार है, जैसा कि अन्य देशवासियों का अधिकार है, कि वे स्वतन्त्र हों और अपने परिश्रम के फल को चखें, उन्हें जीवन की सब आवश्यक सुविधायें प्राप्त हों जिससे कि अपनी वृद्धि के सब अवसर उनको सुलभ हो सकें। हम यह भी विश्वास करते हैं कि यदि कोई भी सरकार अपने देशवासियों को उनके अधिकारों से वंचित रखती है और उनका दमन करती है तो लोगों का यह भी अधिकार है कि वे उसको बदल दें या सर्वथा समाप्त कर दें।"

इस प्रकार भारतीय स्वतन्त्रता का निर्णायक संघर्ष आरम्भ हो गया। गांधी जी को नई युद्ध नीति का सूत्रधार बनाया गया। जवाहरलाल इसके अग्रणी सैनिक बनाये गये।

भारतीय युवकों के हीरो

लाहौर कांग्रेस के बाद भारतीय क्षितिज पर जवाहरलाल नेहरू का चमकते सितारे के रूप में उदय हुआ। वे भारतीय युवकों के हीरो थे। आत्मत्याग के वे ज्वलन्त प्रतीक बन गये थे।


पूर्ण
स्वराज


स्वराजभवन
आनन्दभवन

१६

आनन्द भवन स्वराज भवन बना

अब तक मोतीलाल नेहरू ने भी यह अनुभव कर लिया था कि अब उनका पुत्र उनका नेता है। उन्होंने इलाहाबाद स्थित अपना विशाल आनन्द भवन राष्ट्र के नाम करने का निश्चय किया। तब उसका नाम स्वराज भवन पड़ गया और इस नये नाम के अन्तर्गत यह बंगला अब अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कार्यालय बना दिया गया।

गांधी जी के ११ सूत्र

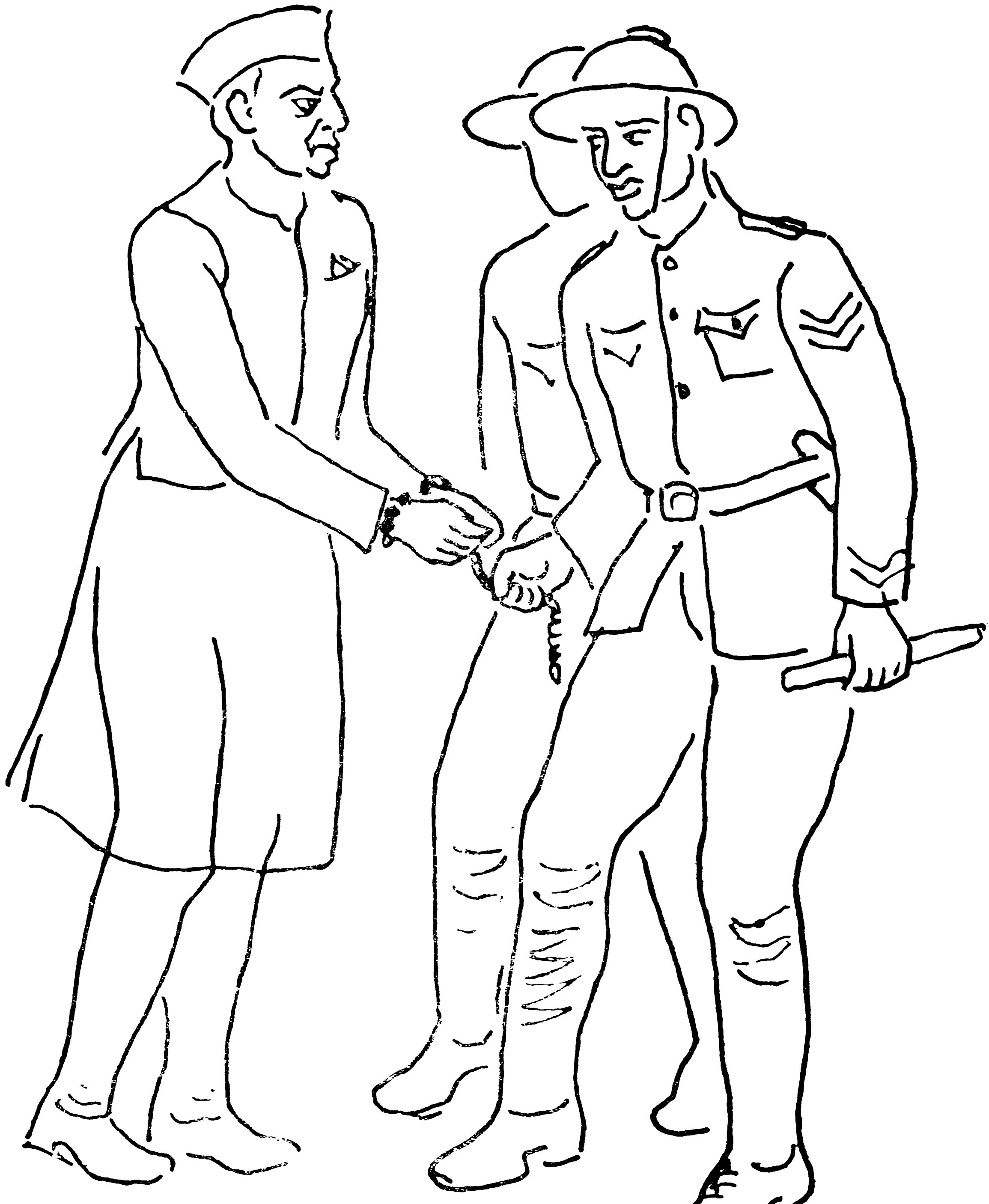
जवाहरलाल की अधीरता का अनुमान करते हुए महात्मा जी ने सरकार के साथ बातचीत करने के लिये कुछ मुद्दों पर विचार करना आरम्भ किया। उन्होंने सुधार के नाम पर ११ सूत्री कार्यक्रम सरकार के सम्मुख रखा। उन्होंने कहा कि यदि ब्रिटिश सरकार उनको स्वीकार कर लेती है तो वे अपना आन्दोलन वापस ले लेंगे। महात्मा जी का यह विचित्र तर्क नेहरू को परेशान करने लगा।

नमक कर का विरोध

उनके ११ सूत्रीय कार्यक्रम में नमक को कर-मुक्त करना भी एक सूत्र था। क्योंकि नमक कर का प्रभाव गरीब लोगों पर पड़ता था इसलिये गांधी जी इसके विरुद्ध थे।

वायसराय की असहमति

तत्कालीन वायसराय लॉर्ड इरविन को गांधी जी का यह कार्य भाया नहीं।



डांडी मार्च

वायसराय की असहमति पर गांधी जी ने १२ मार्च, १९३० को अपने अनेक साथियों के साथ गुजरात में समुद्र के किनारे स्थित डांडी स्थान के लिये कूच कर दिया। १६ अप्रेल को वहां पहुंचने पर उन्होंने कानून को भंग कर प्रतीकात्मक रूप में नमक बनाया। सारा देश जो कि इस नाटक पर टक-टकी लगाये हुए था गांधी जी के इस प्रतीकात्मक विरोध का अभिप्राय समझ गया।

पुलिस दमन चक्र

आरम्भ में तो सरकार ने इस घटना को साधारण मजाक में लिया। किन्तु बाद में उनको पता चला कि किस प्रकार गांधी जी ने अपने डांडी मार्च के माध्यम से कानून की अवहेलना का खेल खेला है। यह मालूम पड़ते ही दमन आरम्भ हो गया। पुलिस ने सैकड़ों नमक बनाने वालों को पीटा और हजारों लोगों को बन्दी बना लिया।

नेताओं की गिरफ्तारियां

५ मई को गांधी जी को भी बन्दी बना लिया गया।

जवाहरलाल नेहरू को अवैधानिक नमक बनाने के आरोप में इलाहाबाद में बन्दी बना लिया। उनको छः मास के लिये नैनी जेल भेज दिया गया।

५ जून को मोतीलाल नेहरू को भी बंदी बना लिया और उनको भी उनके पुत्र के साथ नैनी जेल भेज दिया गया। आखिर पिता और पुत्र एक ही संघर्ष में एक स्थान पर मिल गये। अब उन दोनों के मस्तिष्क समान विचारों के हो गये थे।

रुग्ण कमला भी सम्मिलित

इस प्रकार सारा देश महात्मा जी के पीछे चल पड़ा। बड़े-बड़े घरों की महिलायें भी सामान्य नारियों में सम्मिलित होकर संविधान की अवहेलना कर बन्दी होने लगीं। यद्यपि कमला नेहरू रुग्ण थीं किन्तु उन्होंने नमक कर के विरुद्ध संघर्ष में भाग लिया।

जो लोग जेल से बाहर थे उन्होंने सरकार और कांग्रेस के मध्य वार्तालाप का यत्न किया।



मध्यस्थों का कार्य

ऐसा लगता था कि गांधी जी तो इस प्रकार की बातचीत के विरुद्ध किन्तु वे समझते थे कि इस विषय में जवाहरलाल का मत ही अन्तिम माना जा

वायसराय तक बात गई तो उसने मोतीलाल नेहरू और जवाहरलाल नेह जेल में गांधी जी से मिलने की अनुमति दे दी। इस प्रकार पिता और पुत्र पू बापू से मिले। उन तीनों ने निश्चय किया कि गांधी जी गोल मेज कांफ्रेंस में भ लिये कुछ शर्तों पर चले जायें। एक तो यह कि 'सरकार' एक राष्ट्रीय सरकार व दे और यह कि भारत को यह अधिकार होगा कि यदि वे चाहे तो ब्रिटिश सा

छोड़ दे । और एक न्यायाधीशों की समिति गठित कर दी जाय जो यह निश्चय करे कि भारत को ब्रिटेन से क्या लेना है और ब्रिटेन को भारत से क्या लेना है ।

वायसराय द्वारा मांगें अस्वीकार

वायसराय ने इन मांगों को अस्वीकार कर दिया ।
नेहरू पिता पुत्र को वापस नैनी जेल में ले जाया गया ।

१७

मोतीलाल की रिहाई

मोतीलाल नेहरू का स्वास्थ्य बिगड़ गया। जेल का कठिन जीवन और वहां का निम्न स्तर का भोजन उनको रुग्ण बना रहा था। इसलिये ८ सितम्बर १९३० को उनको जेल से रिहा कर दिया गया। वे स्वास्थ्य लाभ के लिये मसूरी चले गये।

इसके एक मास बाद जवाहरलाल नेहरू को आज्ञा मिली कि वे मसूरी जाकर अपने पिता से मिल सकते हैं। उस समय उनका सारा परिवार वहां एकत्रित था। उन्होंने पूरे पांच दिन वहां पर उन लोगों के मध्य रहते हुए चुपचाप सहे।

जवाहरलाल की पुनः गिरफ्तारी

जवाहरलाल जब इलाहाबाद लौट कर आये तो 'सरकार' ने उनको आज्ञा दी कि वे किसी सभा को सम्बोधित नहीं करेंगे। किन्तु तभी किसानों का एक बहुत बड़ा दल उनसे मिलने के लिये आया। उनकी इच्छा थी कि नेहरू उनके सम्मुख भाषण दें। उसी दिन एक अन्य सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। उसी रात्रि को उनको फिर पकड़ कर नैनी जेल में भेज दिया गया। उनको दो वर्ष का कारावास और जुर्माना हुआ। जुर्माना अदा न करने पर छः मास का और कारावास का दण्ड निर्धारित किया गया।

लोगों ने १४ नवम्बर को विरोध सभाओं के रूप में जवाहरलाल का जन्म दिन मनाया। इसमें लगभग ४ हजार लोग पकड़े गये।

पहली गोल मेज कांफ्रेंस

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार ३० नवम्बर को लन्दन में पहली गोल मेज कांफ्रेंस का अधिवेशन आरम्भ हुआ। इस अधिवेशन में कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किसी ने नहीं किया। किन्तु सरकार को यह आशा थी कि एक वर्ष बाद जब इसका दूसरा अधिवेशन

होगा तो उसमें गांधी जी अवश्य आयेंगे।

गांधी जी की मुक्ति

सद्भावना के रूप में वायसराय ने गांधी जी, जवाहरलाल तथा अन्यान्य नेताओं को जेल से मुक्त कर दिया।

समाचार मिला कि मोतीलाल की तबियत बहुत खराब है। समाचार सुनते ही बापू और जवाहरलाल इलाहाबाद में मोतीलाल नेहरू के समीप पहुंच गये। उन्होंने पाया कि मोतीलाल दिन-प्रति-दिन गिरते जा रहे हैं। डाक्टरों ने परामर्श दिया कि उनको लखनऊ ले जाया जाय।

मोतीलाल नेहरू का निधन

जवाहरलाल यद्यपि निरन्तर अपने पिता की चौकसी पर रहते थे किन्तु ६ फरवरी १९३१ की प्रातःकाल शान्ति से, सोते-सोते उन्होंने प्राण त्याग ही दिये।

उनके पार्थिव शरीर को कांग्रेस के झण्डे में लपेट कर आनन्द भवन ले जाया गया। जब लाखों लोग अपने मृत नेता को श्रद्धा सुमन अर्पित कर चुके तो गंगा के किनारे उनका अन्तिम संस्कार कर दिया गया। उस समय नेहरू की मनःस्थिति कैसी थी, इसका वर्णन करते हुए बाद में नेहरू ने जो लिखा वह नीचे दिया जा रहा है।

पुत्र की वेदना

नेहरू ने लिखा : "अग्निज्वालायें आकाश की ओर उन्मुख हुईं और उस शरीर को भस्मसात् कर लिया, जिसका न केवल हमारे लिये अपितु लाखों करोड़ों भारतीयों के लिये बहुत बड़ा महत्त्व था। अन्तिम संस्कार के समय गांधी जी ने वहां उपस्थित जनसमूह को सान्त्वना के कुछ शब्द कहे और फिर हम लोग घर को वापस आ गये। जिस समय हम एकाकी और खिन्न से घरों को लौट रहे थे आकाश पर खूब तारे चमक रहे थे।"

पिता और पुत्र में जो सम्बन्ध थे वे प्यार और मित्रता के सम्बन्ध थे। किन्तु फिर भी जवाहरलाल में पिता के प्रति पुत्रोचित भय और आदर विद्यमान था। ऐसा लगता था कि वे सदा ही अपने वृद्ध पिता के परामर्श पर निर्भर रहते थे।

यह ऐसा ही विरोधाभास था। अपने प्रौढ़ पुरुषों के प्रति उनमें बिद्रोह की भावना थी। किन्तु अन्त में जवाहरलाल अपने पूर्व पुरुषों से समझौता कर ही लेते थे। अब गांधी जी ने उनके पिता का स्थान ले लिया था।

गोल मेज कांफ्रेंस की विफलता

जिस दिन मोतीलाल नेहरू की मृत्यु हुई थी उसी दिन भारत से गोल मेज कांफ्रेंस में भाग लेने के लिये गये विभिन्न दलों के लोग भारत वापस लौटे। ये उदारवादी, सुधारवादी और अधिकारीगण वहां से खाली हाथ आये थे। उनमें से कुछ लोग गांधी जी के पास आये और उनसे आग्रह करने लगे कि वे अगली कांफ्रेंस में अवश्य जाएं।

गांधी जी की शर्तें

दिल्ली में १७ फरवरी को गांधी जी और लॉर्ड इरविन के मध्य एक बैठक हुई। गांधी जी ने छः सूत्री सुझाव प्रस्तुत किये : राजनीतिक बन्दियों की रिहाई, पुलिस राज का अन्त, जब्त सम्पत्ति की वापसी, निलम्बित अधिकारियों का पुनर्स्थापन, पुलिस ज्यादतियों की जांच और नमक पर से सरकार के एकाधिकार की समाप्ति।

वायसराय की सहमति

वायसराय ने गांधी जी की इन सब शर्तों को स्वीकार कर लिया।

जवाहरलाल की असहमति

जवाहरलाल और अन्य युवक नेताओं ने अनुभव किया कि इस समझौते में तो स्वराज ही गायब है। उनको इससे नाराजगी थी और इसके लिये उन्होंने अंग्रेजी के कवि टी० एस० इलियट के निम्न शब्द उद्धृत किये थे :

"यह वह मार्ग है जिससे संसार का अन्त होता है।
···धमाके से नहीं अपितु ठनठनाहट से।"

कांग्रेस का कराची अधिवेशन

उसी वर्ष कराची के कांग्रेस अधिवेशन में बहुत सारा जनसमूह एकत्रित होकर गांधी जी के विरुद्ध नारे बाजी करने लगा ।

महात्माजी क्या कर सकते थे, उन्होंने उनको सहन किया ।

जवाहरलाल को इस बात के लिये तैयार कर लिया गया कि वे गांधी-इरविन समझौते को स्वीकार करने के विषय में प्रस्ताव प्रस्तुत करें, इससे आगे के लिए वार्तालाप का मार्ग खुल गया ।



ब्रिटेन में मजदूर राज का पतन

इसके तुरन्त बाद, दुर्भाग्य से, भारत के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया रखने वाली ब्रिटेन की रैमजे मैकडोनाल्ड के नेतृत्व वाली मजदूर सरकार का पतन हो गया और राष्ट्रीय सरकार, जो कि मुख्यतया अपने कारनामों से बिलकुल अनुदारवादी थी, आ गई। यह नया राज भारतीय स्वतंत्रता का प्रबल विरोधी था। कठोर स्वभाव के लॉर्ड विलिंग्डन को भारत का वायसराय बना कर भेजा गया और नम्र स्वभाव के लॉर्ड इरविन को वापस बुला लिया गया।

गांधी जी की सहमति

गांधी जी और नेहरू नये वायसराय से मिले। उससे उन्होंने यह अनुमान लगा लिया कि कांग्रेस जो कोई भी आन्दोलन करेगी सरकार उसको चूर-चूर कर देगी। इसलिये उन्होंने लन्दन जाकर बात करना स्वीकार कर लिया।

निराशापूर्ण वापसी

बहुत अधिक आशा न रखते हुए भी गांधी जी ने २७ अगस्त १९३१ को जहाज द्वारा लन्दन के लिए प्रस्थान किया। वहां ब्रिटिश सरकार ने हिन्दू-मुस्लिम समस्या उठा दी। गांधी जी उनको समझाने में सर्वथा असफल रहे और दिसम्बर मास में खाली हाथ भारत लौट आये।

जवाहरलाल की गिरफ्तारी

गांधी जी जब लन्दन से लौटकर बम्बई पहुंचे तो वहां उनको बताया गया कि जवाहरलाल को गिरफ्तार कर लिया गया है। इस घटना पर बम्बई की बहुत बड़ी जनसभा में गांधी जी ने कहा, "ईसाई वायसराय की ओर से यह क्रिसमस का उपहार है।"

१९

कर विरोधी आन्दोलन

जिस प्रकार जवाहरलाल को बन्दी बनाया गया था उससे यह साफ पता चलता था कि सरकार के इरादे क्या हैं। इसके साथ ही सरकार की ताकत कितनी है इसका भी अन्दाजा लग गया था। यूनाइटेड प्रान्त के किसान भारी लगान देने में असमर्थ थे। स्थानीय कांग्रेस ने 'कोई कर नहीं' आन्दोलन आरम्भ किया। इसके उत्तर में 'सरकार' ने एक विशेष आज्ञा निकाली कि प्रदर्शनकर्ताओं को बिना किसी मुकदमे के सीधे जेल भेज दो।

बमबारी

इससे क्रुद्ध होकर युवा विद्रोहियों ने इधर-उधर बम डालने आरम्भ कर दिये। इनमें जो आतंकवादी पकड़े गए उनको फांसी पर लटका दिया गया।

जवाहरलाल फिर गिरफ्तार

गांधी जी के लन्दन से लौटने के कुछ ही दिन पहले जवाहरलाल अपनी पत्नी कमला को जो फिर बीमार हो गई थी, इलाज के लिए बम्बई ले गए। जब वे वहां से वापस आ रहे थे तो इलाहाबाद के निकट किसी छोटे से स्टेशन पर पुलिस उनके डिब्बे में घुसी। वहां पर उनको यह आज्ञा दी गई कि वे नगर से बाहर न जाएं, किसी जन सभा को सम्बोधित न करें और न ही कोई लेख लिखें।

जवाहरलाल ने घर पहुंचते ही जिलाधीश को एक बहुत ही जोरदार शब्दों वाला पत्र लिखा।

उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वे बम्बई जाकर गांधी जी से मिलेंगे। जिस

गाड़ी में वे यात्रा कर रहे थे वह इलाहाबाद से कुछ ही दूर पहुंची थी कि उसको रोक लिया गया। जवाहरलाल को पकड़ कर छठी बार नैनी जेल भेज दिया गया।

जेल में लेखन

जेल में जवाहरलाल जी अपनी पुत्री इंदिरा को पत्र लिखने में व्यस्त रहने लगे। वे अपनी पुत्री को अपने पत्रों द्वारा कुछ पढ़ाना चाहते थे। क्योंकि वे स्वयं व्यक्तिगत रूप से उसकी शिक्षा में किसी प्रकार की सहायता नहीं कर सकते।

'पिता के पत्र पुत्री के नाम' पुस्तक में सृष्टि का विषय लिया गया है कि किस प्रकार संसार में सृष्टि आरम्भ हुई।

गांधी जी ने जब जवाहरलाल की गिरफ्तारी का समाचार सुना तो उन्होंने लॉर्ड विलिंग्डन को भेंट करने के लिये एक पत्र लिखा। इसके उत्तर में ४ जनवरी १९३२ को उनको भी गिरफ्तार कर लिया गया।

आगे के चार महीनों में एक लाख से भी अधिक लोगों को जेल में डाल दिया गया। जवाहरलाल को दो साल का कारावास मिला। उनकी बहिनें स्वरूप और कृष्णा को एक-एक वर्ष का कारावास दिया गया। एक प्रदर्शन के अवसर पर उनकी वृद्धा दुर्बल माता को पीटा गया।

इन सब घटनाओं ने जवाहरलाल को आघात पहुंचाया।

सरकार ने उनको मसूरी भेज दिया।

'सरकार' कांग्रेस का मलियामेट करने के लिये कृतसंकल्प थी।

गांधी जी का अनशन

१७ अगस्त १९३२ को, गांधी जी की इच्छा के विरुद्ध सरकार ने अपने इस निश्चय की घोषणा की कि हरिजनों को अलग समुदाय के रूप में माना जायेगा। उनको अलग मताधिकार प्राप्त होगा। इस आज्ञा के विरुद्ध गांधी जी ने अनशन आरम्भ कर दिया। उस समय के हरिजनों के नेता अम्बेडकर ने 'सरकार' के इस 'कम्युनल अवार्ड' के विरुद्ध गांधी जी के साथ एक समझौता कर लिया।

जवाहरलाल की मुक्ति

क्योंकि जवाहरलाल जी की माता जी बहुत बीमार हो गई थीं इसलिये उनको उनके पास रहने के लिये जेल से छोड़ दिया गया।

विश्व इतिहास की झलक का प्रकाशन

जिन कुछ घटनाओं ने जवाहरलाल को प्रसन्नता प्रदान की उनमें से एक थी इंदिरा का सोलहवां जन्मदिन समारोह। उस दिन एक छोटी-सी पार्टी भी दी गई। उस अवसर पर उन्होंने अपनी पुत्री को 'विश्व इतिहास की झलक' नामक पुस्तक भेंट की। इसमें अपनी पुत्री को जेल में लिखे गये कुछ अन्य पत्र थे, जिनमें विश्व इतिहास पर उड़ती दृष्टि डाली गई थी। यह पुस्तक युवकों के लिये लाभकारी थी।

इस पुस्तक से यह विदित होता था कि किस प्रकार अपने जेल के दिनों में जवाहरलाल स्वयं को सान्त्वना दिया करते थे। ऐसा दिखाई देता था कि भारत की जनता ने अपने देश के लिये जो संघर्ष किया था उसका नेहरू पर बड़ा प्रभाव पड़ा और कालान्तर में उन्होंने जो वीरता का कार्य किया उसकी प्रेरणा इससे ही प्राप्त हुई थी। इसलिये वे इतिहास का पाठ केवल इसलिये पढ़ाना चाहते थे कि न केवल उन्हें अपने अतीत का ज्ञान प्राप्त करना चाहिये अपितु इसलिये भी चाहते थे कि इसके आधार पर भविष्य का निर्माण किया जा सकेगा। अपनी इस मनस्थिति के आधार पर उन्होंने यह आविष्कार किया कि इतिहास महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह हमें परिवर्तन के लिये अन्तर्ज्ञान दिलाता है और बताता है कि चीजें क्यों बदलती हैं और हम इस इतिहास से अपने भावी इतिहास में किस प्रकार प्रविष्ट हो सकते हैं।



२०

पूर्णस्वराज्य की मांग

जवाहरलाल नेहरू ने देशवासियों का आह्वान किया कि २६ जनवरी १९३४ के दिन 'स्वतन्त्रता दिवस' मनाया जाय।

किन्तु जब वह दिन आया उससे पहले ही बिहार में बहुत बड़ा भूकम्प आ गया। जवाहरलाल दौड़े-दौड़े वहां की निर्धन जनता का समाचार लेने पहुंचे और वहां से वे कलकत्ता के लिये चले गए। उनके वापस कलकत्ता आने के बाद पुलिस उनके पास आई और बंगाल में दिये गये भाषण के आधार पर उनको पकड़ कर ले गई। उनको पुनः जेल में डाला गया और दो वर्ष का कारावास देकर अलीपुर जेल की एक छोटी-सी कोठरी में रख दिया। वहां पर उन्होंने लिखने पढ़ने का काम फिर शुरू कर दिया और खाली समय में आकाश में उड़ते पक्षियों को देखना, जेलर से गप्पें लड़ाना, किन्तु सदा कार्य करने के स्वप्न संजोते रहना यह उनकी दिनचर्या थी। स्वयं को स्वस्थ रखने के लिये उन्होंने हठ योग का अभ्यास आरम्भ किया और प्रातःकाल के समय वे शीर्षासन करने लगे।

उनको समाचार पत्र पढ़ने के लिये देने की अनुमति नहीं मिली थी, किन्तु अफवाहें तो जेल की दीवार के छेदों से भीतर पहुंच ही जाया करती थीं। जापान ने चीन पर आक्रमण कर दिया था। हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी युद्ध के मार्ग पर चलने लगा था। सारे संसार में औपसर्गिक रोग की भांति युद्ध ज्वर फैल रहा था।

कलकत्ता का वातावरण ही नमी भरा था। कोठरी में बन्द रहने की अवधि बहुत लम्बी थी। परिणाम स्वरूप जवाहरलाल का भार कम होने लगा। उनको वहां से देहरादून जेल में भेज दिया गया। वहां उनकी पत्नी कमला उनसे मिलने के लिये आईं। इससे उनको प्रसन्नता हुई, यद्यपि उनकी पत्नी स्वयं बड़ी रुग्ण दिखाई देती थीं।

जब कमला का स्वास्थ्य ठीक नहीं हुआ तो उनको कुछ दिनों के लिए अगस्त १९३४ में जेल से छोड़ दिया गया। जब वे जेल से बाहर आये तो उनको पता चला कि

उनकी वृद्धा माता भी बहुत सख्त बीमार हैं। ग्यारह दिन बाद पुलिस आई और उनको पकड़ कर नैनी जेल में ले गई।

आत्मकथा का आरम्भ

'सरकार' ने जवाहरलाल को कहा कि यदि वह राजनीति से सर्वथा पृथक रहने का आश्वासन दें तो उनको जेल से छोड़ा जा सकता है। किन्तु उन्होंने अपने विचारों को उन पर लादना चाहा और अपनी आत्मकथा लिखने में लगे रहे। कुछ दिनों बाद कमला को उनके स्वास्थ्य के कारण पर्वतीय क्षेत्र भंवाली ले जाया गया।

'सरकार' ने नेहरू को भी नैनी से अलमोड़ा जेल में स्थानान्तरित कर दिया। ४५ वर्ष की आयु में उनको कभी जेल भेजते कभी छोड़ देते।

२१

फिर स्विट्जरलैंड

मई १९३५ में कमला नेहरू को चिकित्सा के लिये योरोप ले जाया गया। ४ सितम्बर को जवाहरलाल नेहरू को जेल से मुक्त कर दिया गया और वे भी उनके पास जा पहुंचे। नेहरू परिवार जब लन्दन गया तो नेहरू ने पाया कि ब्रिटिश सरकार भारत की स्वतन्त्रता के सख्त खिलाफ है। वे नये सुधारों की बातें करते थे। योरोपवासी हिटलर को उसकी जघन्य कार्यप्रणाली पर कार्य करने की उसको खुली छूट दे रहे थे।

अन्त में जवाहरलाल को कमला से भी अलग होना ही पड़ा, जब स्विट्जरलैंड में २८ फरवरी १९३६ को उनकी इहलीला समाप्त हुई। इंदिरा गांधी जी उस समय लौसान में स्कूल में पढ़ रही थी अपनी माता की मृत्यु के समय अपने पिता के पास ही थी।

विगत दो वर्ष के कारावास जीवन की अवधि में जवाहरलाल ने अपनी आत्मकथा पूर्ण कर ली थी। लन्दन के प्रकाशक 'बोडली हेड' इसको प्रकाशित कर रहे थे। उन्होंने उस पुस्तक को अपनी पत्नी को समर्पित करने के लिये अपने प्रकाशकों को तार देकर, समर्पण में यह प्रकाशित करने के लिए लिखा : 'कमला को, जो अब इस संसार में नहीं है।'

वीर-पुरुष की विपत्ति

यह उनके हृदय की भावना थी जिसके विषय में इससे पूर्व उन्होंने कभी किसी से कुछ कहा नहीं था। उपरिलिखित शब्द उनके दुखमय जीवन की कहानी कहते हैं। वे अपनी पत्नी से प्यार करते थे किन्तु उसके साथ रह नहीं सके थे, क्योंकि वे भारत माता को भी उतना ही प्यार करते थे। जब वे दुखी और एकाकी भारत लौटे तो उन्होंने पाया कि उनका देश विप्लवों से घिरा हुआ है।



२२

राष्ट्रों का लोभ

जवाहरलाल नेहरू यह भली भांति समझते थे कि संसार तीव्र गति से बदल रहा है। उपनिवेशों के निवासी स्वतन्त्रता भी चाहते थे और रोटी भी चाहते थे। किन्तु साम्राज्य-वादी सरकारें अधिकाधिक उपनिवेशों को हथिया कर उनका प्रभुत्व अपने हाथ में रखने के लिए उतारू थे। कुछ उग्रवादी राष्ट्र जैसे जर्मनी, इटली और जापान इतने लालच में फंस गये थे कि वे एक विरोधी साम्राज्य खड़ा करना चाह रहे थे। लालच, घृणा को पालता है। योरोप के समाजवादी साम्राज्यवादी सरकार के विरोधी थे। सभी देशों में प्रत्येक व्यक्ति दुखी था किन्तु यह नहीं जानता था कि क्यों।

लखनऊ का अध्यक्षीय भाषण

कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में जवाहरलाल ने भारतवासियों को स्पष्ट कहा कि हिटलर, मुसोलिनी और जापानी युद्ध प्रवृत्त लोग युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को विश्व में नाजीवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध किये जाने वाले युद्ध के साथ जोड़ने का यत्न किया। उन्होंने घोषणा की कि उनकी धारणा के अनुसार समाजवाद के बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है।

मनुष्य और मनुष्य के बीच का न्याय प्रजातन्त्रात्मक रीति से प्राप्त किया जा सकता है। और औरतों को समानाधिकार दिया ही जाना चाहिये।

अधिकांश भारतीय नेता भारत से बाहर के देशों की स्थिति से परिचित नहीं थे। कभी-कभी तो रूढ़िवादी पुराने कांग्रेसी नेता वास्तविकता के प्रति आंखें ही मूंद लिया करते थे।

लीग और कांग्रेस

कांग्रेस ने १६३५ के रिफोर्म एक्ट के अन्तर्गत चुनाव लड़े थे। और उसने लगभग सभी स्थान जीत भी लिये थे। शेष स्थान अल्पसंख्यकों को मिले। इस प्रतिद्वंद्विता में मोहम्मद अली जिन्ना मुस्लिम लीग के प्रबल नेता के रूप में उभरे थे। उनका कहना था कि कांग्रेस हिन्दुओं की संस्था है। नेहरू ने उनसे पूछा कि तब अब्दुल गफ्फार खां इसके सदस्य क्यों हैं ?

जवाहरलाल यह जानते थे कि भारत के इन निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में कोई शक्ति नहीं है। इसलिये वह इन खिलौना निर्वाचनों में किसी प्रकार की रुचि लेना उचित नहीं समझते थे। किन्तु उन्होंने कांग्रेसजनों को पद लेने के लिये अपनी सहमति दे दी थी।

स्पेन यात्रा

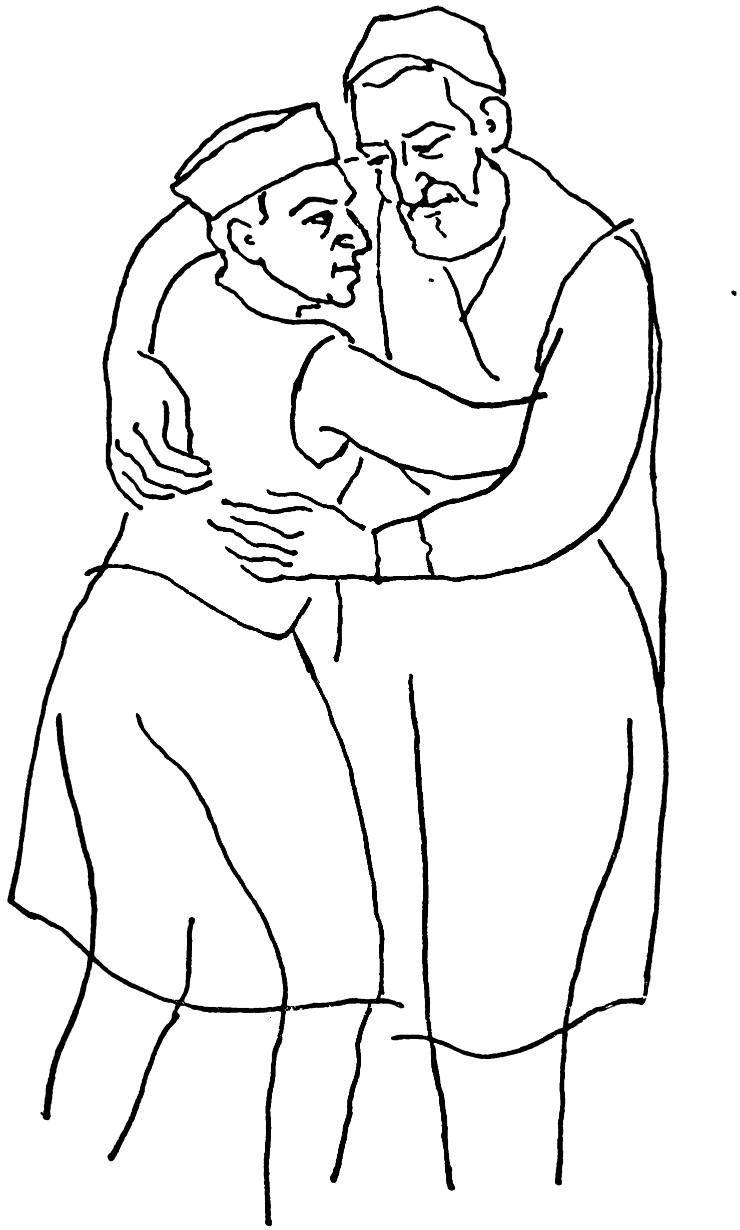
स्पेन के गृहयुद्ध में स्पेन की जनतंत्रीय सरकार के विरुद्ध हिटलर और मुसोलिनी के हस्तक्षेप करने से जवाहरलाल ने अनुभव किया कि वे अब विश्व युद्ध की ओर अग्रसर हो रहे हैं। उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से वहां का जायजा लेने के विचार से स्पेन की यात्रा की। किन्तु जब ब्रिटिशर्स ने म्युनिख में चैकोस्लोवाकिया के विरुद्ध हिटलर के साथ समझौते में हस्ताक्षर किये तो नेहरू समझ गये कि अब युद्ध अवश्यम्भावी है, क्योंकि यह तानाशाह योरोप एक के बाद एक देश को अपने में मिलाता जा रहा था।

चीन की यात्रा

नेहरू सितम्बर १६३६ में चीन में जापानियों के सैनिक केन्द्रों को देखने के लिये जब चीन की यात्रा पर गये तो उसी समय द्वितीय विश्व युद्ध का समाचार घोषित किया गया।

भारत को युद्ध में घसीटा

जवाहरलाल जब भारत वापस आये तो उन्होंने देखा कि अंग्रेजों ने अपने लोक-



तान्त्रिक और स्वतन्त्रता की रक्षा के युद्ध में अपने प्रतिद्वन्द्वी हिटलर के विरुद्ध भारत को लगा दिया है। जवाहरलाल चाहते थे कि यदि भारत को स्वतंत्र कर दिया जाता है तो वे अपने देशवासियों से कहना चाहते थे कि नाजीवाद के विरुद्ध लोकतन्त्र और स्वाधीनता के लिये ब्रिटेन के साथ-साथ युद्ध में प्रवृत्त हों। इसके उत्तर में नये वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने कहा कि अब तो प्रत्येक बात के लिये युद्ध समाप्त होने तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।

गांधी जी का सत्याग्रह

गांधी जी ने भारतवासियों को कहा कि युद्ध के किसी भी प्रयास में वे अंग्रेजों के साथ सहयोग नहीं करें। और उन्होंने अपने शिष्य बिनोबा भावे के साथ एक प्रतीकात्मक सत्याग्रह आरम्भ कर दिया।

महात्मा जी को अक्टूबर १९४० में बन्दी बना लिया गया। उसके कुछ दिनों में अन्य भी हजारों लोगों को जेल में डाल दिया गया। इनमें जवाहरलाल सहित कांग्रेस कार्य-समिति के सभी सदस्य भी थे।

२३

अमेरिका युद्ध में कूदा

जापान ने, जो कि जर्मनी और इटली का सहयोगी था, ७ दिसम्बर १९४१ को प्रशान्त महासागर के निकट पर्ल हारबर में अमेरिका के नौ सैनिक अड्डे पर आक्रमण कर दिया। फासिस्ट जर्मनी, इटली और जापान तथा सम्मिलित शक्तियां ब्रिटेन और फ्रांस के परस्पर युद्ध में अब तक अमेरिका तटस्थ था। इस आक्रमण से वह सम्मिलित शक्तियों के साथ युद्ध में कूद पड़ा।

जब जापानी सेना सुदूर पूर्व में सब ओर से आगे ही बढ़ती जा रही थी तब ब्रिटिश सरकार में बड़ी खलबली मच उठी थी। उन्होंने जवाहरलाल को यह समझ कर जेल से मुक्त कर दिया कि इससे वह भारतीयों को ब्रिटेन के युद्ध प्रयासों में सम्मिलित कर देंगे। किन्तु इतने पर भी, वे आज भी भारत के साथ किसी प्रकार की रियायत करने की घोषणा नहीं करना चाहते थे।

क्रिप्स मिशन का आगमन

जब जापानियों ने १९४२ में बर्मा और दक्षिण पूर्व एशिया पर अधिकार कर लिया तो ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने वहां के समाजवादी नेता सर स्टेफर्ड क्रिप्स को भारतीय नेताओं से बातचीत के लिए भारत भेजना स्वीकार कर लिया। क्रिप्स ने कहा कि युद्ध समाप्त होने पर भारत को प्रभुसत्तात्मक राज्य दिया जायेगा।

बाद की तारीख का चैक

गांधी जी ने इस भेंट को 'बाद की तारीख का चैक' कहा। भारत ने क्रिप्स के प्रस्ताव को ठुकरा दिया, किन्तु जवाहरलाल ने कहा कि यदि जापानी भारत पर आक्रमण करते हैं तो भारत अंग्रेजों के युद्ध कार्यों में किसी प्रकार की बाधा उपस्थित नहीं करेगा।

भारत छोड़ो प्रस्ताव

भारत की जनता की भावनाओं को इससे ठेस पहुंची। महात्मा जी को इसका आभास हुआ। युद्ध होता है अथवा नहीं होता, उनका कहना था कि अंग्रेज भारत छोड़ें। उन्होंने मई १९४२ में 'भारत छोड़ो' का नारा घोषित कर दिया। ८ अगस्त को कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव की पुष्टि कर दी।

जेल भरो आन्दोलन

९ अगस्त १९४२ की रात्रि में सरकार ने गांधी जी सहित कांग्रेस कार्य समिति के सभी सदस्यों को बन्दी बना लिया। महात्मा जी को पूना के निकट आगा खां पैलेस में ले जाया गया। जवाहरलाल नेहरू, वल्लभभाई पटेल, मौलाना आजाद और डा० राजेन्द्र प्रसाद को बम्बई से लगभग ११८ मील दूर अहमदनगर किले में भेज दिया गया। इसके बाद अन्य लोगों की धर-पकड़ आरम्भ हो गई। सन् १९४२ के अन्त तक साठ हजार से भी अधिक लोगों को जेल भेज दिया गया।

युवाओं का विद्रोह

इस घटना से भारत के युवक हिंसक बन बैठे। उन्होंने युद्ध प्रयत्नों को निष्फल करने का यत्न किया। कुछ सरकारी भवनों को तहस-नहस कर दिया गया। 'सरकार' ने इस घटना के बाद सब पर सम्मिलित जुर्माना ठोक दिया। यह लगभग नब्बे लाख का था।


भारत छोड़ो

२४

जवाहरलाल नेहरू की पीड़ा

यह नवीं बार था, जब जवाहरलाल नेहरू को जेल भेजा गया था। इस बार उनको तीन वर्ष का कारावास दिया गया था।

इस प्रकार इस महापुरुष का कष्ट बड़ा ही पीडादायक था। 'पीडा, पीडा, स्वप्न और क्षोभ'—कवि लोरसा के ये शब्द उसकी चित्तवृत्ति को भली प्रकार अभिव्यक्त करते हैं। उनकी दृष्टि विश्वजनीन थी। वे जानते थे कि भारत प्रगतिशील मानवता का एक भाग है। नाजीवाद की विजय सब कुछ नष्ट-भ्रष्ट कर देगी। इसलिये उनका अब अधिकांश समय अपने सहयोगियों से विचार विमर्श में ही बीतने लगा था। जैसा कि उनका स्वभाव था इसके अतिरिक्त वह कुछ बागवानी कर लेते थे और पुस्तक पढ़ना तो उन्होंने कभी छोड़ा ही नहीं।

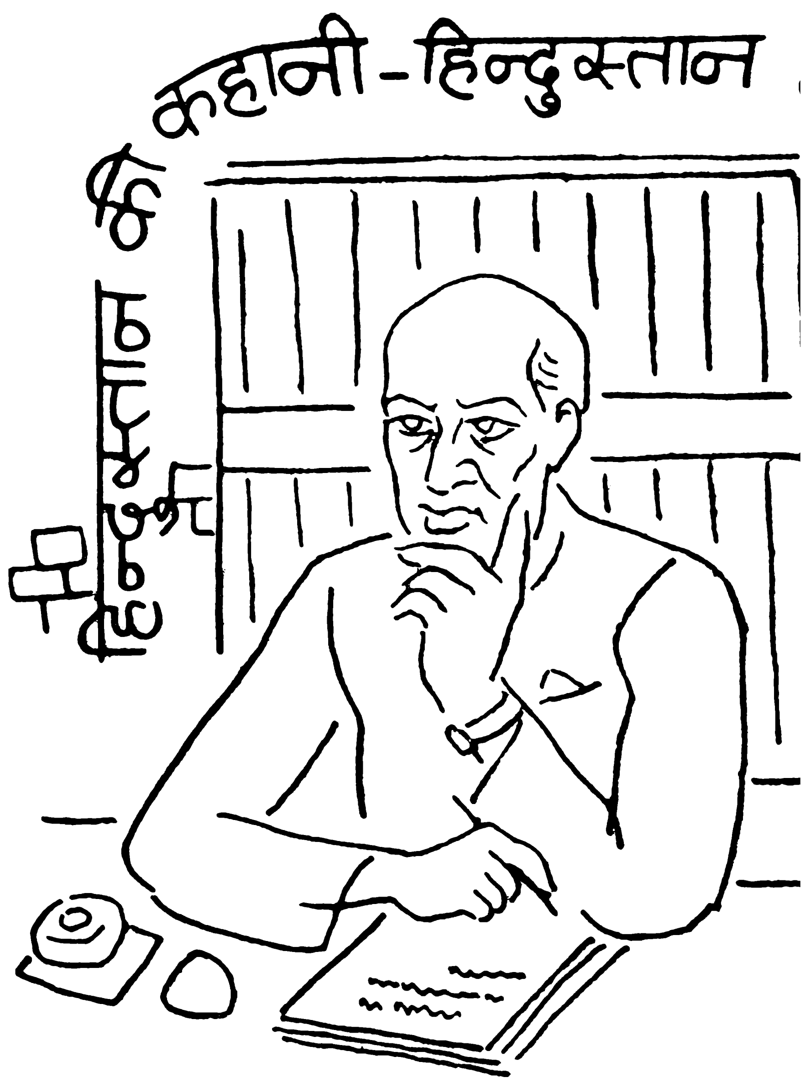
भारत की खोज

स्वयं को सान्त्वना देने के लिए उन्होंने फिर लेखन कार्य आरम्भ किया। इस बार उनकी इच्छा 'भारत की खोज' पुस्तक लिखने की हुई। इस पुस्तक में वे भारत के अतीत गौरव, हमारे पूर्वजों के बुद्धिशील क्रिया कलाप, उनकी उपलब्धियां और हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुसलमान, सिख, ईसाई और अन्य समुदाय के लोग सम्मिलित जीवन का मार्ग किस प्रकार प्राप्त कर सके, इसकी खोज का वर्णन करना चाहते थे।

अतीत का मोह

वे चाहते थे कि वे स्वयं और हम लोग इस खजाने को ग्रहण करें। उन्होंने कहा : "विदेशियों ने हमें हमारी संस्कृति से बिलकुल विलग कर दिया था इसलिये हमको अपनी बपौती की पुनः खोज करनी चाहिये।" वे चाहते थे कि हम अपनी असफलताओं के विषय

में भी जानें । इसलिए उन्होंने अनुभव किया कि यह सब हमें अपने अ
सकता है जिसकी कि कुछ प्रासंगिकता के साथ उसमें कुछ आज के म
जैसे कि आज जो सब दुख में निमग्न हैं उनके लिए बुद्ध की करुणा
की अहिंसा जिसे गांधी जी अपने जीवन में ढालना चाह रहे थे, धर्म
और वे गीता के कर्मयोग के आधार पर हमें निरन्तर कर्म करने की
में श्रद्धाभक्ति को भी वे उचित मानते थे । गुरु नानक का प्यार, यह स



२५

गांधी जी का अनशन

फरवरी १९४३ को अचानक पं० जवाहरलाल ने सुना कि गांधी जी बीस दिन का व्रत रख रहे हैं। वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो ने इसको राजनीतिक चाल बताया। किन्तु सरकार ने महात्मा जी को जेल से छोड़ने की पेशकश की। गांधी जी ने स्वीकार नहीं किया। किन्तु गांधी जी इस परीक्षा में चमत्कारिक रूप से पार निकल गये।

लॉर्ड वैवल का आगमन

सितम्बर १९४३ में अंग्रेज सरकार ने फील्ड मार्शल लॉर्ड वैवल को भारत का वायसराय नियुक्त कर दिया।

बंगाल का अकाल

दुर्भाग्य से सरकार ने अतीत में जो उपेक्षा की थी उसका परिणाम भयंकर संकट के रूप में सामने आया। बंगाल अकाल की चपेट में आ गया। सरकार ने उन जमाखोरों को प्रोत्साहित किया, जिन्होंने सरकार को युद्ध के लिये धन दिया था, कि वे जैसा चाहें वैसा करें। साढ़े तीस लाख लोग भूख से मौत के मुख में चले गए।

सन् १९४४ के वर्ष में मित्र राष्ट्र फिर रक्षात्मक स्थिति में आ गये।

रूस ने नक्शा बदला

जब हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया तो वह पूर्व और पश्चिम सभी मोर्चों पर युद्ध कर रहा था। अमेरिकन और रसियन सेना की सहायता से युद्ध की दिशा थोड़ी बदल रही थी। रूस की सेना द्वारा वोल्गा के पार स्टालिन गार्ड में जर्मन सेना को घेर लेना

युद्ध के लिए नई दिशा खोलने वाला सिद्ध हुआ। इससे युद्ध की लहर मित्र राष्ट्रों के पक्ष में बहने लगी।

गांधी जी की मुक्ति

'सरकार' ने मई १९४४ में गांधी जी को जेल से मुक्त कर दिया। यह इसलिए कि वे नहीं चाहते थे कि भारतीय नेता अपने खराब स्वास्थ्य के कारण जेल में प्राण छोड़े। वास्तव में स्वतन्त्रता की हमारी मांग के उत्तर में चर्चिल ने कहा था : "हमारे पास जो है हम उसे रखते हैं, छोड़ते नहीं। इसलिए वह इस बात के लिये तैयार नहीं है कि उसके प्रधान मन्त्रित्व में ब्रिटिश साम्राज्य सिमटे।"

सांप्रदायिक अलगाव

भारत में हिन्दू और मुसलमानों के मतभेद जारी रहे। अंग्रेज लोग सन्देह और घृणा की ज्वाला को हवा देते रहे। गांधी जी इन मतभेदों के विषय में विचार विमर्श करके सद्भावना स्थापित करना चाहते थे। वे मिस्टर जिन्ना से, जो अब पाकिस्तान के रूप में पृथक मुस्लिम राज्य चाहने लगे थे, उनसे बात करना चाहते थे। किन्तु जिन्ना जानते थे कि अंग्रेज भारत विभाजन के लिये सहसा तैयार हो जायेंगे।

नेहरू उत्तर भारत की जेल में

सन् १९४५ में विश्व युद्ध लगभग समाप्ति की ओर बढ़ रहा था। 'सरकार' ने अहमदनगर किले के बन्दियों को उनके अपने-अपने प्रान्त की जेलों में स्थानान्तरित करना आरम्भ कर दिया। जवाहरलाल को पहले नैनी जेल में स्थानान्तरित किया और फिर बरेली, फिर उसके बाद पर्वतीय क्षेत्र अल्मोड़ा की जेल में भेज दिया।

२६

ब्रिटिश लेबर पार्टी की घोषणा

अंग्रेज लोग यह जानते थे कि युद्ध के उपरान्त वे अपने उपनिवेशों को उस भांति नहीं रख पायेंगे जैसे कि अब तक रखते आये थे। जो अंग्रेज सैनिक भारत में रह रहे थे। अपने घरों को पत्र में लिखा करते थे कि ब्रिटिश राज में कैसा दमन और क्रूरता का शासन है। युवक अंग्रेजों ने देखा था कि १९४२ के अकाल में बंगाल में किस प्रकार लोगों के प्राण गए थे।

ब्रिटेन की लेबर पार्टी ने घोषणा कर दी कि यदि आगामी निर्वाचनों में वे सत्ता में आये तो वे भारत को प्रभुसत्तात्मक राज्य दे देंगे।

हिरोशिमा और नागासाकी में अणु बम

जब अमेरिका ने हिरोशिमा और नागासाकी में अणु बम फेंका तो जापान ने वे सब क्षेत्र अगस्त १९४५ में मित्र राष्ट्रों को वापस कर दिये जिन पर उसने अधिकार कर लिया था। युद्ध तो जीता गया किन्तु असंख्य लोगों की निर्मम हत्या के मूल्य पर। सभी ओर से ६०० लाख से भी अधिक मनुष्य मारे गए थे। पांच सौ लाख लोग उजड़ गये थे और योरोप के अनेक नगर नष्ट हो गये थे।

नये प्रस्ताव

नई अंग्रेज सरकार ने कुछ नये सम्भावित प्रस्ताव प्रस्तुत किये। किन्तु भारत में जो सरकार थी उसका मस्तिष्क उस प्रकार कार्य नहीं कर रहा था जैसा कि इंग्लैंड की सरकार का करता था। उन्होंने उन भारतीय सैनिकों पर अभियोग चलाने आरम्भ कर दिए जिन्हें जापानियों ने युद्ध के अवसर पर मलाया में मुक्त कर दिया था और तब



जिन्होंने आजाद हिन्द फौज के रूप में नेता जी सुभाषचन्द्र बोस के नेतृत्व में अंग्रेजों के विरुद्ध दक्षिण पूर्व एशिया में युद्ध किया था ।

सैनिकों पर अभियोग

आजाद हिन्द फौज के सैनिकों पर जब अभियोग चलने लगे तो इससे भारतीय जन-मानस क्रुद्ध हो उठा । आजाद हिन्द फौज का ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध करना उनके लिये गर्व की बात थी । जवाहरलाल नेहरू देशभक्त वकील भूलाभाई देसाई के साथ इस अभियोग में आजाद हिन्द फौज की रक्षा के लिए बैरिस्टर के रूप में उपस्थित हुए । यद्यपि आजाद हिन्द फौज के सैनिकों को सजायें दी गईं किन्तु शीघ्र ही उनको छोड़ भी दिया ।

१९४६ के निर्वाचन

भारत में जनवरी १९४६ में निर्वाचन हुए । जहां-जहां भी कांग्रेस के प्रत्याशी खड़े थे वहां-वहां लगभग वे सभी विजयी रहे । इसी प्रकार मुस्लिम लीग भी उन सभी स्थानों पर विजयी हुई जहां-जहां उनके प्रत्याशी खड़े थे ।

नौसैनिक विद्रोह

देश का वातावरण बड़ा तनाव पूर्ण हो गया था । लोगों की अधीरता बढ़ती जा रही थी ।

भारतीय नौसेना के कुछ सैनिकों ने १९ फरवरी १९४६ को बम्बई गोदी में विद्रोह कर दिया । इस विद्रोह की लहर कोचीन और कराची गोदी तक भी जा पहुंची थी । थोड़े ही दिनों में विद्रोहियों ने २० जहाजों पर अपना नियन्त्रण बना लिया, जिसमें प्रधान नौसेनापति का मुख्य जहाज भी सम्मिलित था ।

सरकार में वल्लभभाई पटेल को डर लगने लगा कि कहीं यह हिंसा चारों ओर न फैल जाय । जवाहरलाल बम्बई गए और उन्होंने दोनों पक्षों से शान्ति बनाये रखने की अपील की । वे जानते थे कि लन्दन की अंग्रेज सरकार का व्यवहार मैत्रीपूर्ण है और वह शीघ्र ही सत्ता हस्तान्तरित कर देगी । उन्होंने कहा कि यदि ब्रिटिश इस बात का प्रमाण चाहते हैं कि भारतीय राज नहीं चला सकेंगे, तो इस नौ सैनिक विद्रोह से उनका समाधान हो गया होगा ।

२७

केबिनेट मिशन की घोषणा

२० फरवरी १९४६ को अंग्रेज सरकार ने घोषणा की कि भारत में सत्ता हस्तान्तरण के विषय पर एक कैबिनेट मिशन भारत जाकर स्थिति का जायजा लेगा ।

जिन्ना के नेतृत्व में मुस्लिम लीग पाकिस्तान से कुछ भी कम लेने के लिए तैयार नहीं थी । इसके लिए सर्वप्रथम वे मुस्लिम बहुल प्रान्तों के वर्गीकरण की बात करते थे । कैबिनेट मिशन ने जिन्ना के सुझावों पर विचार किया । किन्तु कांग्रेस अखण्ड भारत की ही बात करतो थी । वायसराय ने इस विषय में अपना मौन बनाये रखा । इस प्रकार वार्ता विफल हो गई ।

अन्तरिम सरकार का प्रस्ताव

जुलाई १९४६ के प्रारम्भ में ही लॉर्ड वैवेल ने, जो कि बहुत ही नम्र स्वभाव का व्यक्ति था और ठीक प्रकार से काम करना चाहता था, जवाहरलाल नेहरू को कहा कि वे उन कांग्रेस मन्त्रियों को भेजें जिनसे कि अन्तरिम सरकार की स्थापना की जा सके ।

लीग की सीधी कार्यवाही

किन्तु इस योजना के विरोध में मुस्लिम लीग ने सीधी कार्यवाही की घोषणा कर दी । इसके परिणाम स्वरूप हिन्दू-मुस्लिम दंगे भड़क उठे और असंख्य भोले-भाले लोगों की, विशेषतया बंगाल में, हत्यायें हो गईं ।

लोगों के मन में दूसरे सम्प्रदाय के लोगों से भय लगने लगा और वे मारे न जायं इसलिए उन्होंने अपने घर छोड़ने आरम्भ कर दिये ।

लॉर्ड वैवेल अपने कार्य में आगे बढ़ते गए और वास्तव में उन्होंने सितम्बर १९४६

में अन्तरिम सरकार का गठन भी कर दिया । जवाहरलाल नेहरू को उन्होंने इस कार्यकारी परिषद का उपाध्यक्ष नियुक्त किया ।

जिन्ना की पाकिस्तान की मांग

मुस्लिम लीग ने अन्तरिम सरकार में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया । बाद में जिन्ना इस बात के लिए राजी हो गए कि वे सरकार में अपने प्रतिनिधि भेजेंगे । किन्तु वे भारत के विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण के लिए कटिबद्ध थे ।

संविधान बनाने के लिए एक संविधान समिति गठित की गई और नवम्बर १९४६ में इसका अधिवेशन हुआ । मुस्लिम लीग ने इसका बहिष्कार किया और फिर दंगे भड़काये ।

लन्दन वार्ता विफल

अंग्रेज सरकार ने भारतीय नेताओं को वार्तालाप के लिये लन्दन बुलाया । जवाहरलाल और जिन्ना प्रतिनिधियों में थे । किन्तु वार्ता सफल नहीं हुई । जिसका कारण जिन्ना का यह दुराग्रह था कि वह अखण्ड भारत में नहीं रहना चाहते, उस भारत में जिसके लिए वह अपने आरम्भिक दिनों में संघर्ष करते रहे थे ।

सत्ता हस्तान्तरण की घोषणा

जो भी हुआ हो, ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा कर दी कि उनकी सरकार ने निश्चय किया है कि वह जून १९४८ से पूर्व सत्ता का हस्तान्तरण कर देगी ।

लॉर्ड माउण्टबेटन की नियुक्ति

प्रधानमन्त्री ने महारानी विक्टोरिया के परपोते लॉर्ड माउण्टबेटन को 'भारत' का नया वायसराय नियुक्त कर आदेश दिया कि वे अंग्रेजों से भारतीयों के हाथ में सत्ता हस्तान्तरण विषय पर कार्य करें ।

२८

देश का विभाजन

मार्च १९४७ में भारत आने पर लॉर्ड माउण्टबेटन ने अनुभव किया कि देश की स्थिति बड़ी नाजुक है। समय-समय पर यहां दंगे होते रहते थे।

नये वायसराय ने यह अनुभव कर लिया कि सत्ता हस्तान्तरण का कार्य १९४८ तक नहीं रोका जा सकता। इसे तुरन्त ही कर दिया जाना चाहिए। यदि सम्भव हो तो भारत की अखण्डता को स्थिर रखा जाय अन्यथा आवश्यक हो तो भारत और पाकिस्तान बना दिया जाय।

जवाहरलाल विभक्त स्वतंत्रता नहीं चाहते थे। किन्तु वे यह भी समझ रहे थे कि मुसलमान सरकार को किसी भी प्रकार काम करने ही नहीं देंगे। इस प्रकार जून १९४७ में कांग्रेस पार्टी ने विभाजन का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। गांधी जी इस विचार के प्रबल विरोध में खड़े हो गए।

१५ अगस्त १९४७ को भारत और पाकिस्तान, इस प्रकार एक देश के दो स्वतंत्र देश बन गये। पाकिस्तान में पश्चिमी पंजाब और पूर्वी बंगाल, जहां मुस्लिम बहुसंख्या में थे, सम्मिलित किये गये। अवशिष्ट देश का भाग इंडिया—जो कभी भारत नाम से जाना जाता था, बन गया।

भाग्य का खेल

जवाहरलाल नेहरू को नए भारत के प्रधानमन्त्री के रूप में शपथ दिलाई गई। उसी दिन अर्ध रात्रि के समय उन्होंने भावावेश में देश को सम्बोधित करते हुए कहा : "बहुत वर्ष पहले हमने भाग्य के साथ एक समझौता किया था। अब समय आ गया है जब हम अपनी प्रतिज्ञा को, यद्यपि पूर्णतया नहीं, पूर्ण प्रकार से नहीं, किन्तु सार रूप में पूर्ण करें। भारतवासिसेयों 'जिनके कि हम प्रतिनिधि हैं, हम अपील करते हैं कि वे विश्वास

और साहस के साथ इस महान साहस के कार्य में, हमारा सहयोग करें । हम स्वतन्त्र भारत माता के रूप में एक ऐसा महल खड़ा करना चाहते हैं जिसमें उसके सभी बच्चे सुखपूर्वक रह सकें ।"

विभाजन की त्रासदी

जवाहरलाल नेहरू के भाषण में जो खिन्नता थी वह एक प्रकार से भविष्यवाणी जैसी थी । हिन्दू मुस्लिम दंगे भड़कने वाले थे । मुसलमान नहीं चाहते थे कि एक भी हिन्दू उनके मध्य में शेष रहे । हिन्दुओं और सिखों ने इसका उसी भाषा में उत्तर दिया । पांच लाख से भी अधिक नर-नारी या तो मारे गए या घायल कर दिये गए । दोनों ओर के शरणार्थी दोनों देशों की सीमाओं को पार करने लगे ।

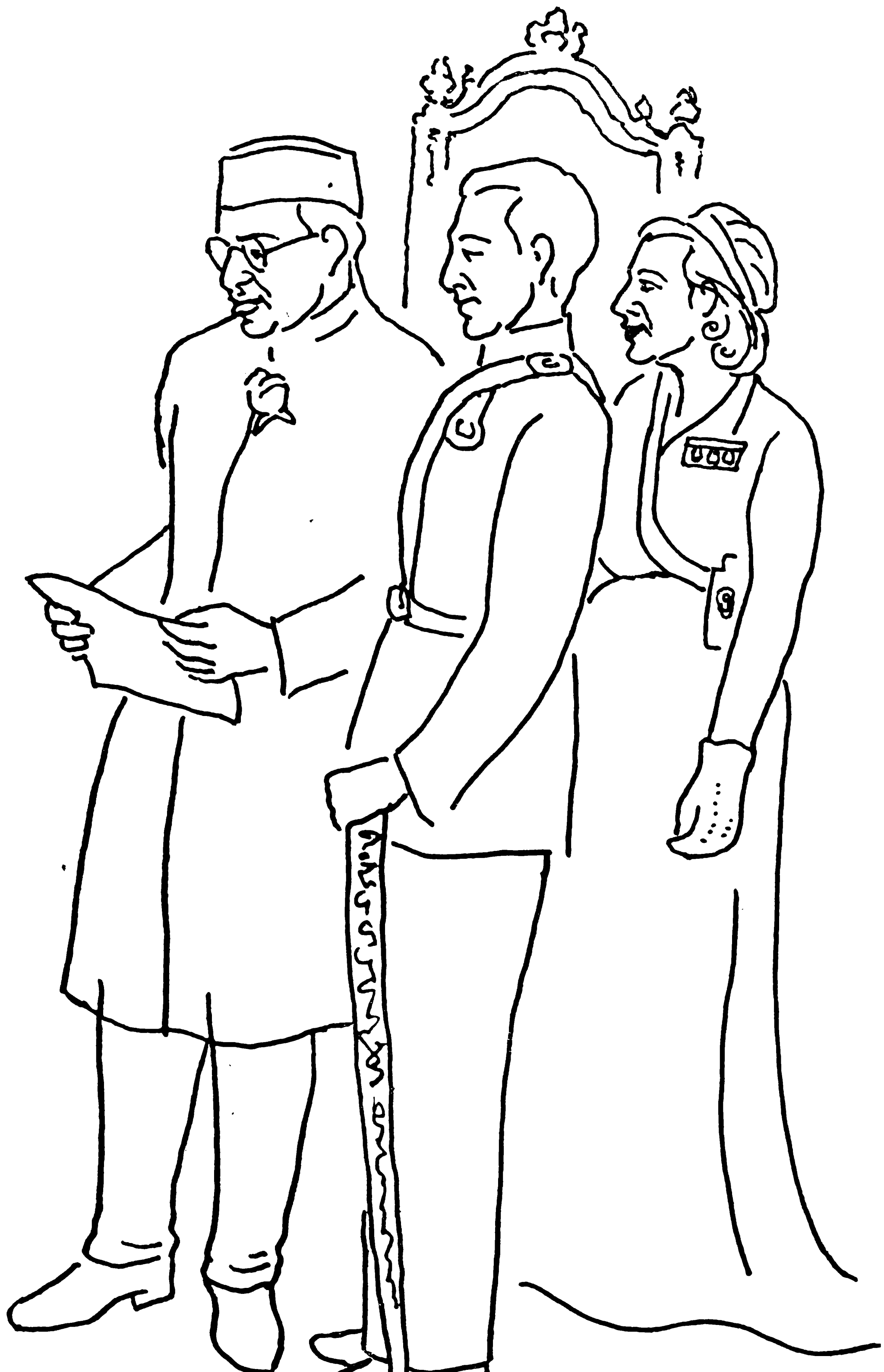
गांधी जी का वध

गांधी जी पूर्वी बंगाल में लोगों को शान्त करने के लिये गए ।

उनके वहां से लौटने के बाद एक दिन बिरला हाउस में प्रार्थना सभा के अवसर पर नाथूराम गोडसे नामक एक युवक ने उनका इसलिये वध कर दिया, क्योंकि उसके कथनानुसार "गांधी जी मुसलमानों का पक्ष ले रहे थे ।" इस प्रकार ३० जनवरी १९४८ को जवाहरलाल ने अपने दूसरे पिता को खो दिया ।

ज्योति विलीन हो गई

इस दुखद घटना पर जो उद्गार जवाहरलाल नेहरू ने व्यक्त किये वे चिरस्मरणीय हैं : "हमारे जीवन में से ज्योति निकल गई है और अब चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार है । मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि इस समय आपको क्या कहूं और किस प्रकार हम इस दु:ख को सहें । यह महान संकट हमें इस बात का संकेत देता है कि हम उनकी उन सब महानताओं को जो हमारे पास हैं, स्मरण रखें । अपनी मृत्यु के द्वारा उन्होंने हमें यह स्मरण रखने के लिए कहा है कि सत्य कभी नहीं मरता । और यदि हमने इसको स्मरण रखा तो इससे भारत का हित होगा···"





२९

भारत का नव-निर्माण

अपने १७ वर्ष के प्रधानमन्त्रित्व के काल में जवाहरलाल को अपने अनेक साथियों का विछोह हुआ । फिर भी अपने देश के प्रति उनकी समर्पण भावना स्थिर रही । उन्हें शरणार्थियों का पुनर्वास करना था । स्वतन्त्रता को स्थिर रखना था । ५७० देशी रियासतों को नये प्रजातन्त्र का अंग बनाना था । नये संविधान का निर्माण करना था । किन्तु जवाहरलाल नेहरू ने इन सब समस्याओं का बड़ी वीरता से सामना किया । और वे बिना रुके ग्यारह से पन्द्रह घंटे तक प्रतिदिन काम करते थे । अपने पुराने कांग्रेसी साथी, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अब्दुल क्लाम आजाद, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, सी० राजगोपालाचार्य, सरोजिनी नायडू आदि धुरन्धरों के साथ उन्होंने स्वतन्त्र भारत की नींव रखी ।

संविधान का निर्माण

भारत में नये संविधान का प्रारूप वास्तव में हरिजन नेता डा० अम्बेडकर ने तैयार किया था । किन्तु विभिन्न धाराओं की व्याख्या आदि का कार्य जवाहरलाल नेहरू और नवगठित संविधान सभा के सदस्यों ने किया । इस संविधान की प्रेरणा प्रधानमन्त्री के मुक्त समाज सम्बन्धी विचारों से ली गई थी ।

वे जो चाहते थे वह यह था; जनता का शासन : जनता के द्वारा, जनता के लिये । यही उनके हृदय की भावना थी । वे चाहते थे कि हमारे सभी लोगों को सुविधाओं के समान अवसर उपलब्ध हों । धर्म प्रत्येक नर-नारी का अपना व्यक्तिगत विषय रहे । राज्य 'सेक्युलर' रहे । विभिन्न समुदायों, जातियों और वर्गों में समान न्याय लागू हो । देश की उन्नति के कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए एक विशेष योजना आयोग का गठन किया गया ।

प्रभुसत्ता सम्पन्न गणतन्त्र

२६ जनवरी १९५० को भारत का नया संविधान लागू कर दिया गया। उस दिन भारत को सर्वतन्त्र स्वतन्त्र गणतन्त्र घोषित कर दिया गया।

अपने विगत शत्रु के प्रति मित्रता का भाव बनाये रखने के लिये भारत ने स्वतन्त्र गणतन्त्र के रूप में 'राष्ट्रकुल' का सदस्य बने रहने का निश्चय किया। सर्वप्रथम भारत ही ऐसा 'अश्वेत' देश था जिसने यह पग उठाया था। कालान्तर में एशिया और अफ्रीका के अन्य अनेक सद्यः स्वतन्त्र देशों ने भारत के उदाहरण का अनुकरण किया।

इस प्रकार यह कौमनवेल्थ अर्थात् राष्ट्रकुल ब्रिटिश साम्राज्य के एकाधिकार से स्वतन्त्र देशों की एक ऐसोशियेसन के रूप में परिणत हो गया।

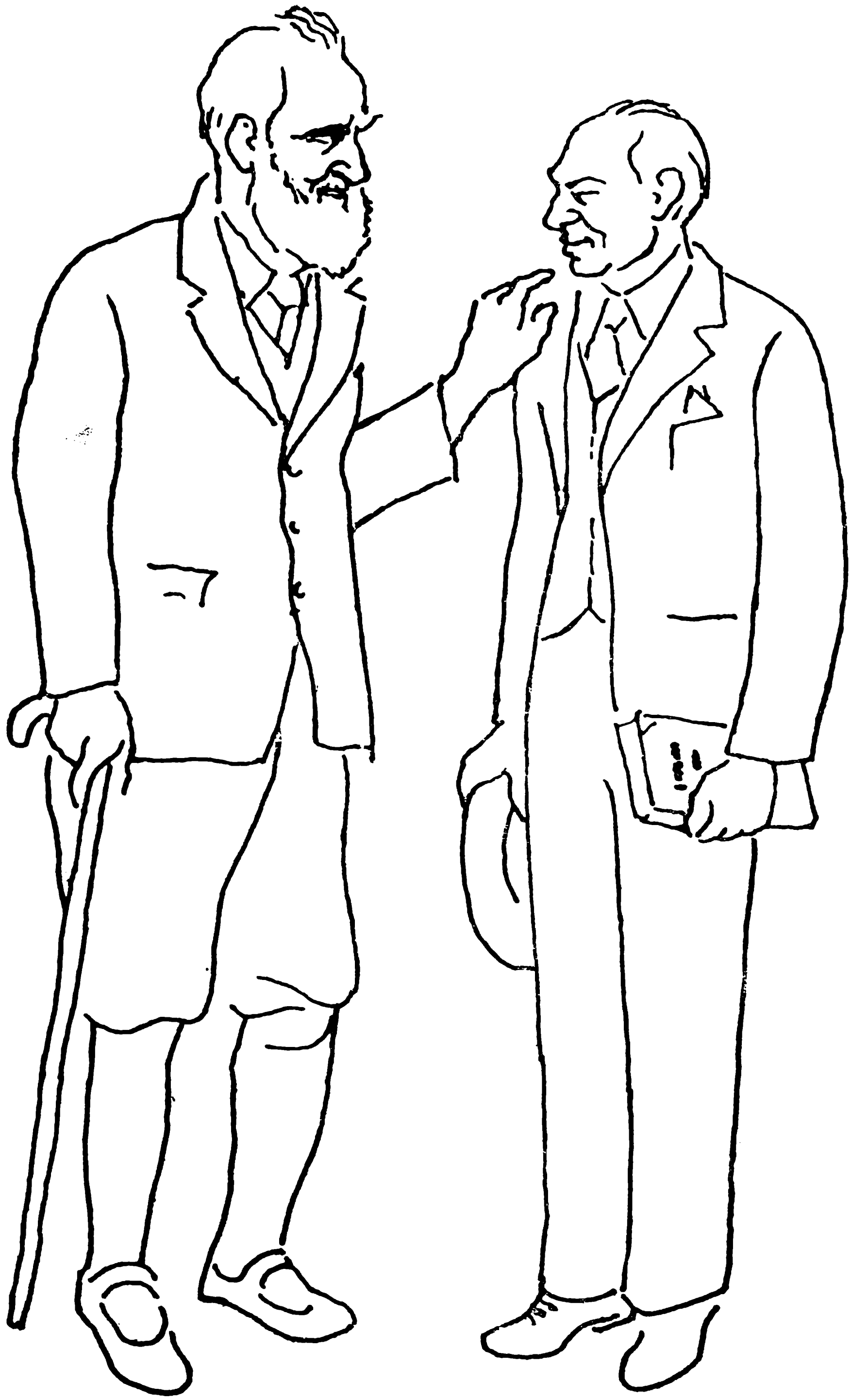
३०

शांति दूत भारत

जवाहरलाल नेहरू प्रधानमन्त्री होने के साथ-साथ सत्रह वर्षों तक भारत के पर-राष्ट्र मंत्रालय को भी स्वयं ही सम्हाले रहे। अपने इस परराष्ट्र मन्त्री के रूप में उन्होंने अहिंसा की परम्परा, जिसे भारत ने गांधी जी से उत्तराधिकार में प्राप्त किया था, पर चलते हुए संसार को जियो और जीने दो का नया जीवनदर्शन प्रदान किया। जहां पुराने मित्र राष्ट्रों में एक प्रकार से शीतयुद्ध-सा आरम्भ हो गया था, वहां भारत संसार में शांति के लिये कार्य कर रहा था। भारत किसी भी प्रकार के दमन और शोषण के विरुद्ध था। वह फिर एक शक्ति द्वारा दूसरी शक्ति का हो अथवा एक जाति द्वारा किसी दूसरी जाति का हो। या फिर एक गुट द्वारा किसी दूसरे गुट का हो। भारत ने कभी युद्ध नहीं चाहा। और इसने शस्त्रीकरण का भी विरोध किया। विशेषतया अणु और परमाणु बम्बों का निर्माण और इनका तथा अन्यान्य अणु यन्त्रों या शस्त्रों के परीक्षण का भारत ने विरोध किया।

ये सारे उद्देश्य मात्र शब्दाडम्बर नहीं थे।

जवाहरलाल नेहरू ने मार्च १९४९ में ही एशियन कांफ्रेंस का आयोजन कर उसमें इण्डोनेशिया की स्वतन्त्रता के लिये जो अभी तक भी डच साम्राज्यवाद के अन्तर्गत था, जोरदार शब्दों में अपनी बात कही। बाद में उन्होंने भारत को उन एशियन और अफरीकन उपनिवेशों के स्वतन्त्रता संघर्ष के साथ जोड़ दिया जो कि अभी तक साम्राज्य के अन्तर्गत पिस रहे थे। उन्होंने भारत को अमेरिका के नेतृत्व वाले पश्चिमी गुट में अथवा रूस के नेतृत्व वाले पूर्वी गुट में सम्मिलित करने से स्पष्ट इनकार कर दिया। इस विषय में उन्होंने विश्व के महान चिन्तकों जैसे बर्नार्ड शॉ, आइन्स्टीन तथा अपनी पुरानी मित्र सरोजिनी नायडू से विचार विमर्श भी किया।




$\Sigma = MC^2$



पंचशील

सन् १९५४ में उन्होंने 'पंचशील' अर्थात् शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व के सिद्धान्त का प्रारूप तैयार किया इस प्रकार तिब्बत के विषय को लेकर चीन के साथ भाईचारे की नीति का प्रतिपादन किया।

भारत की विदेश नीति को, प्रथम प्रकरण में घोषित 'जीवन्त तटस्थता' को कालान्तर में नेहरू ने 'नोन-अलाइन्मैंट' अर्थात् किसी भी गुट में शामिल न होने का नाम दिया। भारत मिलिट्री ब्लौक और बेस जैसे किसी नकारात्मक कार्य में भागीदार नहीं बनेगा, अपितु हम सब राष्ट्रों के साथ मिलकर विश्व के पुनर्गठन, पुर्नानिर्माण जैसे विधायक कार्यों में काम करेंगे। हम प्रत्येक विषय को उसके परिपेक्ष में परखेंगे। और हम यूनाइटेड नैशन्स को विभिन्न देशों को स्वतन्त्रता के रूप में सहयोग देंगे, जो कि विश्व शान्ति का एक मुख्य आधार बन सकता है।

३१

कल्याणकारी राज्य

भारत को जनकल्याणकारी राज्य बनाने का नेहरू का स्वप्न अब साकार होने लगा था।

सन् १९५२ में भारत में सार्वजनिक निर्वाचन किये गये जिनमें सोलह करोड़ से भी अधिक लोगों ने भाग लिया।

इन निर्वाचनों में जवाहरलाल के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी को बहुत बड़ी विजय प्राप्त हुई।

सामुदायिक विकास

अक्टूबर २, १९५२ के दिन जवाहरलाल नेहरू ने ग्रामीणों की सहायता और विकास के लिए 'सामुदायिक विकास कार्यक्रम' का शुभारम्भ किया। उस दिन उन्होंने कहा : "यह कार्य जो आज आरम्भ किया जा रहा है वह स्वयं ही उस क्रान्ति का घोष कर देगा जिसके लिये लोग बहुत समय से चिल्ला रहे थे। यह ऐसी क्रान्ति नहीं है जिसमें कोहराम हो और एक-दूसरे के सिर फोड़े जाते हों, किन्तु यह एक ऐसा निरन्तर प्रयास होगा जिसके माध्यम से गरीबी दूर होगी। यह भाषण करने का समय नहीं है। हमें अपने परिश्रम से भारत को महान बनायें।" और उन्होंने स्वयं प्रतीकात्मक रूप में कुदाल हाथ में लेकर सड़क निर्माण के कार्य का शुभारम्भ किया।

पंचवर्षीय योजना

यहां तक कि जब भारत स्वतन्त्र नहीं हुआ था, नेहरू अनुभव करते थे कि जब तक भावी भारत की समृद्धि के लिये कोई निर्धारित कार्यक्रम न हो देश का निर्माण नहीं हो सकता। वे अनुभव करते थे कि यह कार्य पंचवर्षीय योजनाओं के आधार पर किया जाना

चाहिये। उन्होंने सोचा कि किस प्रकार सोवियत यूनियन ने अपनी योजना के माध्यम से पिछड़े हुए लोगों को आगे बढ़ा कर उनके अतीत इतिहास से उनको भावी इतिहास की ओर अग्रसर किया है। जनता की आवश्यकता को अवश्य ध्यान से देखा जाना चाहिये।

इस प्रकार सन् १९५० में एक योजना आयोग का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू स्वयं बने।

इस आयोग ने नेहरू के दिशा निर्देश पर प्रथम तीन पंचवर्षीय योजनाओं का प्रारूप तैयार किया जिसमें देशवासियों का भी भाग था।

प्रधानमन्त्री ने यह अनुभव किया कि भारत की यह अपार जनसंख्या उद्योग और कृषि में अन्तर को स्पष्ट किये बिना अपनी समस्याओं को नहीं सुलझा सकती। लाखों की संख्या में निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये सब कुछ पहले से ही सोचकर रखना होगा। बजट को विभिन्न मदों में समान विभाजन अथवा आवश्यकतानुसार विभाजन के आधार पर व्यय करना होगा और यह निश्चय करना होगा कि सब लोगों को इसका लाभ बराबर पहुंच रहा है।

उत्पादनों में वृद्धि

सर्वप्रथम स्टील पर ध्यान देकर निश्चय किया गया कि इसका उत्पादन एक मिलियन टन से बढ़ाया जाय। अब तक सारे देश में जमशेदपुर में केवल एक ही स्टील संयन्त्र था जो कि वैयक्तिक क्षेत्र के अन्तर्गत टाटाओं के अधिकार में था, इसलिए ब्रिटिशर्स की सहायता से बंगाल के दुर्गापुर क्षेत्र में एक नया संयन्त्र स्थापित किया गया। उसके बाद रूस की सहायता से मध्यप्रदेश के भिलाई स्थान पर एक अन्य संयन्त्र स्थापित किया गया। इससे स्टील का उत्पादन तिगुना बढ़ गया।

बांध : नये मंदिर के रूप में

इसी प्रकार अनेके छोटे और बड़े बांधों का निर्माण किया गया। जिनमें पंजाब में भाखड़ा नांगल, उत्कल में हिराकुद, कर्नाटक में तुंगभद्रा नदी में, आन्ध्र प्रदेश में नागार्जुन सागर और राजस्थान में गांधी सागर मुख्य हैं।

सिन्दरी में एक खाद कारखाना स्थापित किया गया।

आगामी २० वर्षों में भारत ने इतनी अधिक प्रगति कर ली जितनी कि वह अंग्रेजों के २०० वर्ष के राज्य में भी नहीं कर पाया था।

समाजवादी समाज

कांग्रेस ने मद्रास के अवाड़ी अधिवेशन में 'समाजवादी समाज' की स्थापना में अपना विश्वास व्यक्त किया। इसके आधार पर जितने भी वैयक्तिक प्रतिष्ठान हैं वे प्रमुखतया उपभोक्ता सामग्री का ही निर्माण करेंगे। राज्य भारी उद्योग और आधारभूत उद्योगों का निर्माण करेगा। इससे भी आगे जवाहरलाल नेहरू चाहते थे कि किसान अपने खेतों को जोतने के लिये अब ट्रेक्टरों का उपयोग करें। अच्छी फसल की उपज के लिए वे अप्राकृतिक खाद का प्रयोग करें। और जहां तक सम्भव हो वे अपने-अपने ग्रामों में सहकारी संस्थायें स्थापित कर एक दूसरे की सहायता करें। जमीन की अधिकतम सीमा का निर्धारण कर दिया गया। प्रधानमन्त्री का ग्रामीणों से बड़ा लगाव था इसलिए वे समय-समय पर उनके पास जाते रहते थे। उन्होंने किसानों को इस बात के लिए प्रोत्साहित किया कि वे खेतो के पुराने साधनों को छोड़कर नए संयन्त्रों से काम करना आरम्भ करें।

भाषाई प्रान्तों का निर्माण

कांग्रेस संघर्ष के आरम्भ के दिनों में उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि विभिन्न शासकीय विभागों की सीमा को दोबारा भाषा के आधार पर निर्धारित करना उपयुक्त होगा। इसके लिए जवाहरलाल ने एक आयोग की नियुक्ति कर उसे एक पद्धति बनाने का कार्य सौंप दिया। और जब इस आयोग ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की तो उसको लागू कर दिया गया।

३२

भारत की एकता का स्वप्न

यह कहा जा सकता है कि जवाहरलाल की दृष्टि में जो भारत की एकता का चित्र था उसको सदा ही उनके अनुयायियों ने उस रूप में ग्रहण नहीं किया । उनमें से बहुत लोगों ने अपने जातिवाद के आधार पर निर्वाचनों में भाग लिया था । ऐसे भी बहुत से थे जिन्होंने धर्म को मुख्य मानकर धर्म के नाम पर राजनीति की थी । यहां तक कि भाषा के प्रश्न पर भी विवाद उत्पन्न किये । नवनिर्मित प्रदेशों में सीमा और पानी का विवाद उत्पन्न होने लगा । इस सबको दृष्टिगत रखते हुए जवाहरलाल नेहरू अपना अधिकतम समय भारत की एकता को स्थिर रखने में बिताने के लिए विवश हो गए थे । उन्होंने सन् १९६३ में 'इन्टेग्रेशन कमिटि' की अध्यक्षता की और उस समय उन्होंने सेक्युलर राज्य में अपने विश्वास को फिर दोहराया ऐसा महासंघ जहां लोग पारस्परिक सद्भावना और आदान-प्रदान की भावना के आधार पर शान्ति से रह सकें ।

आत्मिक जीवन

फैक्टरियों, बांधों, ट्रैक्टरों और राजनीति में अधिक ध्यान केन्द्रित करते हुए भी वे मनुष्य की आत्मा के विषय में कभी भूले नहीं । वे समझते थे कि मनुष्य की समृद्धि के लिए विज्ञान प्रभावशाली अस्त्र है । उन्होंने राष्ट्रीय विज्ञान प्रयोगशालाओं के निर्माण की ओर ध्यान देना आरम्भ किया । इस समय मनुष्य को अपने क्षेत्र में विधायक कार्य करने के उद्देश्य से उनकी सहायता के लिए मुख्य राष्ट्रीय अकादमियों की स्थापना की गई । नृत्य, नाटक और संगीत की समृद्धि के लिए संगीत नाटक अकादमी । चित्रकला, वास्तुकला आदि की समृद्धि के लिए ललित कला अकादमी । और साहित्य की समृद्धि के लिये साहित्य अकादमी की स्थापना की गई । साहित्य अकादमी की स्थापना के अवसर से ही जवाहरलाल नेहरू इसके अध्यक्ष रहे और अपने जीवन के व्यस्त क्षणों में भी वे उसकी सभी बैठकों में सदा उपस्थित रहे

बाण्डुंग सम्मेलन

अपने विभिन्न अवसरों पर की गई विदेशों की यात्राओं के मध्य उन्होंने भारत के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को सुदृढ़ करने का यत्न किया। अपने उभरते एशिया के दृष्टिकोण को कार्यरूप देने के लिये जवाहरलाल नेहरू बाण्डुंग में सम्पन्न होने वाली एशियन कांफ्रेंस में सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन में उनके पंचशील के सिद्धान्तों पर पुनर्विचार हुआ और उनका पुनर्निर्माण कर एशिया और संसार की एकता के लिए दस सिद्धान्तों का निर्धारण किया गया।

यू० एन० ओ० में नेहरू

सन् १९६० में जवाहरलाल नेहरू न्यू यॉर्क में यूनाइटेड नेशंस औरगेनाइजेशन में सम्मिलित हुए। उन्होंने वहां एकत्रित लोगों से आग्रह किया कि हम सब मिलकर बैठें और शस्त्र निर्माण की प्रवृत्ति को रोकने के लिये मार्ग और साधनों की खोज करें। उनका कहना था कि शस्त्रों के निर्माण में युद्ध की प्रवृत्ति अवश्यमभावी हो जाती है। इसलिये उनका विचार था कि अणु बमों का परीक्षण रोक दिया जाय।

निर्गुटता का सिद्धान्त

सन् १९६१ में बेलग्रेड में तटस्थ राष्ट्रों का जब सम्मेलन हुआ तो जवाहरलाल नेहरू उसकी जीवन्त आभा के रूप में उभरे थे। उन्होंने देखा कि एशिया और अफ्रीका के अनेक नये देश उनके दो शस्त्र गुटों में से किसी भी एक गुट में सम्मिलित न होने के सिद्धान्त को स्वीकार कर चुके हैं। और उनको यह देखकर प्रसन्नता हुई कि उनके विश्व सम्बन्धी विचारों को जिनमें शान्ति और भाईचारा मुख्य था, स्वीकार कर लिया गया है।

रंगभेद का विरोध

इस तथ्य के बावजूद कि जवाहरलाल नेहरू भारतीयों के एकछत्र नेता हैं, वे अधिक औपचारिकता में विश्वास नहीं करते थे। एक बार जब वे लन्दन में थे तो उनसे पूछा गया कि वे अफरीका के विषय में क्या अनुभव करते हैं, जहां सभी रंगों के लोगों को बड़ी अमानवीयता से दबाया जा रहा है। उन्होंने कहा : "यदि मैं भारत का प्रधानमन्त्री न होता तो

मैं मकान की छत पर खड़ा होकर इसके विरुद्ध चिल्लाता।"

जैसा कि कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उनके विषय में कहा था "उनको सत्य बोलने में कभी लज्जा नहीं आई, भले ही वह बड़ा भयंकर क्यों न हो। और न कभी उन्होंने अपनी सुविधानुसार असत्य से समझौता किया।"

चीन का विश्वासघात

सन् १९६२ में चीन ने भारत के अरुणाचल और लद्दाख प्रदेशों में आक्रमण करके पंचशील के सिद्धान्त की धज्जियां उड़ा दीं। इससे जवाहरलाल का भ्रम मिट गया। उनको लगा कि जिस प्रकार वे निष्ठावान हैं अन्य लोग वैसे नहीं हैं। फिर भी उनमें कड़ुवाहट नहीं आई। इसलिए जब कोलोम्बो में शक्तियां बैठीं और निश्चय किया कि भारत और चीन के मध्य वार्तालाप का प्रस्ताव रखा जाय तो नेहरू ने उसको तुरन्त स्वीकार कर लिया।

अणुअस्त्रों पर रोक

सन् १९६४ में बड़े-बड़े राष्ट्रों में वे प्रथम नेता थे जिन्होंने उस सन्धि पर हस्ताक्षर किये जो अणु अस्त्रों पर प्रतिबन्ध के लिये की गई थी।

वे अन्त तक मानव बने रहे।

अन्तिम शब्द

एक बार उन्होंने कहा था : "मुझे इसकी चिन्ता नहीं है कि मेरे बाद मेरी प्रसिद्धि को क्या होता है। किन्तु यदि कोई भी व्यक्ति मेरे विषय में सोचे तो मैं उसको कहना चाहूंगा : ठहरो 'यह वह व्यक्ति था जिसने अपने सम्पूर्ण मस्तिष्क और हृदय से भारत और भारतवासियों को प्यार किया था। और बदले में वे उस पर दयावान थे और उन्होंने उसको भरपूर प्यार दिया।'

३३

नेहरू के जीवन का एक दिन

जवाहरलाल नेहरू के जीवन का कोई भी दिन हमेशा बड़ा ही होता था। वे प्रभात वेला में उठते। नाश्ते का समय अपने मित्रों से मिलने का समय होता था। ९ बजे के बाद विभिन्न विभागों के सचिव उनको घेरकर उनसे परामर्श लेते। प्रतिदिन दो या तीन बैठकें होती थीं कोई बड़ी कोई छोटी। वे ५, १० या २० लोगों से भेंट भी किया करते थे। शाम के समय वे किसी इस या उस समारोह में सम्मिलित होते थे। यदि कोई चित्रकार उनको अपनी कला दिखाना चाहता था तो वे उसके स्टूडियो में पहुंच जाते थे। उनको कविता से बड़ा प्यार था इसलिये वे अपने घर पर कवि सम्मेलन अथवा मुशायरे के लिये कवियों को आमंत्रित किया करते थे। चाहे शाही भोजन हो अथवा घर का भोजन रात्रि में वे पुस्तक अवश्य पढ़ते थे जिन्हें वे सदा खरीदते रहते थे। या फिर वे राजदूतों, मुख्य मन्त्रियों तथा मित्रों को पत्र लिखा करते थे। उनको जो भी पत्र प्राप्त होता था, उसका उत्तर वे अवश्य लिखते थे। और लगभग ५० पत्र उनको एक दिन में मिलते थे।

शायद यह उनका व्यस्त कार्यक्रम ही था जिसने उनके जीवन की सीमा को छोटा कर दिया।

अस्वस्थ

जनवरी १९६४ के भुवनेश्वर के कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर उनकी बाईं पसली में आघात लगा। उनको पूर्ण विश्राम की सलाह दी गई, इससे उनका स्वास्थ्य कुछ सुधरा। किन्तु आराम उनके लिए हराम था, उन्होंने फिर कार्य आरम्भ कर दिया।

अन्तिम क्षण तक कार्य

उसी मास वे भारत नेपाल सीमा पर स्थित मेसोल्टर गए, जहां नेपाल के राजा

महेन्द्र ने बड़े सिंचाई संयन्त्र की नींव रखी थी।

उसके तुरन्त बाद उन्होंने योजना आयोग के एक अधिवेशन की अध्यक्षता की जिसमें चौथी पंचवर्षीय योजना पर विचार विमर्श होना था।

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की बैठक में उपस्थित रहने के लिए उन्होंने बम्बई की उड़ान भरी। वहां उन्होंने साम्प्रदायिक सद्भावना पर महत्वपूर्ण भाषण दिया। क्योंकि उनको आभास होने लगा था कि हिन्दुओं और मुसलमानों के मध्य विद्यमान हठधर्मी लोग पुनः एक-दूसरे पर अविश्वास जताने लगे हैं।

वहां से दिल्ली वापस आने पर उन्होंने नेपाल के महाराज से बात की।

उन्होंने एक संवाददाता सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें किसी ने उनसे पूछा : "नेहरू के बाद कौन ?" उन्होंने मजाक में उत्तर दिया : "मेरा जीवन इतनी जल्दी समाप्त नहीं हो रहा है।" उसके बाद वे दो दिन आराम करने के लिए देहरादून के लिए उड़ चले। लोगों का विश्वास था कि वे शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे।

देहरादून में भी उन्होंने अनेक फाइलों पर दृष्टि डाली। वे कुछ पढ़ते भी रहे और किसी एक पुस्तक के लिये उन्होंने भूमिका भी लिखी। वे वहां अपने पुराने लन्दन के विद्यार्थी जीवन के मित्र और राष्ट्रीय संघर्ष में अपने साथी श्री प्रकाश से मिले।

२६ मई को वे दिल्ली वापस आये। अपना काम पूर्ण करने के लिये आधी रात तक काम में लगे रहे। उसके बाद वे सोने चले गये, कुछ तबियत खराब-सी लगने लगी तो वे उठ बैठे और एक पुस्तक पढ़ने लगे।

२७ मई को उनका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ गया और वे उठ नहीं पाये। डॉक्टर बुलाये गये। उनकी पुत्री इंदिरा गांधी उनके पास ही थीं। उनकी बहिनों को भी बुलवा लिया गया।

उस दिन पार्लियामेन्ट में संविधान संशोधन पर विचार हुआ। जवाहरलाल नेहरू इस अधिवेशन में भाग लेने के लिये ही देहरादून से वापस आये थे। किन्तु वे उसमें उपस्थित नहीं हो सके।

अन्तिम क्षण

डॉक्टर यथा शक्ति उनकी चिकित्सा करते रहे।

लगभग २ बजे उनके प्राण पखेरू उड़ गये।

उनकी पुत्री इंदिरा गांधी को उनकी डेस्क के पास अमेरिकन कवि रोबर्ट फ्रोस्ट की कविता की कुछ पंक्तियां अपने पिता द्वारा लिखी हुई मिलीं।

वचन निभाना है

"वनप्रान्त सुन्दर घना और गहन है,
किन्तु मुझे कुछ वचन पूरे करने हैं।
सोने से पूर्व मुझे अभी मीलों चलना है,
और सोने से पूर्व मुझे मीलों चलना है।"

३४

अनुपम बुद्धि

जवाहरलाल की अनुपम बुद्धि का प्रमाण उन सब कृत्यों में और वस्तुओं में पूर्णतया प्राप्त होता है जो उन्होंने किये । उनकी उत्सुकता सदा ही असीम रही उन्हें जीवन से प्यार था और वे चाहते थे कि उनका जीवन न केवल उनके लिये अपितु सभी के लिये उपयोगी हो । इसलिये अपने कर्तव्य का पालन करने में उन्हें विशेष आनन्द आता था । वास्तव में कहा करते थे कि निरन्तर काम करना उनकी एकमात्र आकांक्षा है ।

चिरस्मरणीय शब्द

"मैं अनेक प्रकार से बड़ा ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति रहा हूं । किन्तु मैं नहीं जानता कि जिस परिपेक्ष में महत्वाकांक्षी शब्द संसार में प्रयुक्त होता है मैं उस प्रकार का महत्वाकांक्षी था । किन्तु मेरी एक आकांक्षा बची हुई है : वह यह कि मेरे जीवन के अब कुछ ही वर्ष शेष हैं, इसलिये अपनी पूर्ण शक्ति और ऊर्जा से जो कुछ भी मुझमें अवशिष्ट है, मैं भारत के निर्माण में उसको लगा दूं । मैं यह कार्य अपने हृदय से चाहता हूं और तब तक करता रहना चाहता हूं जब तक कि मैं सर्वथा अशक्त न हो जाऊं । मुझे इस बात की चिन्ता नहीं है कि आप अथवा कोई अन्य जन इसके बाद मेरे विषय में क्या सोचता है । मेरे लिए यही पर्याप्त है कि मैंने स्वयं को, अपनी शक्ति को अपनी ऊर्जा को, भारत के लिये समाप्त कर दिया ।"

इस प्रकार के शब्द केवल उसी व्यक्ति के मुख से निकल सकते हैं जो जनसाधारण के साथ एकसार हो गया हो । बहुत बड़े कामों को करते हुए वे यह कभी नहीं भूले कि वे यह सब भारत के नर-नारी और बच्चों के कल्याण के लिये कर रहे हैं । यही कारण था कि यद्यपि उनको जन साधारण से प्यार था फिर भी उन्होंने वैयक्तिक मित्रता पर भी उतना ही ध्यान दिया । इस प्रकार हजारों किसान, साधारण कामगार, विद्यार्थी, लेखक और

राजनीतिज्ञ यह कह सकते थे कि उनकी उनसे व्यक्तिगत मित्रता है।

सबके दुख में दुखी

मनुष्य मात्र से प्यार करने में विशेषतया दुर्बल, निर्धन और साधारण मनुष्यों से उन्होंने अपने मानवी सम्बन्धों के विषय में एक बार कहा था : "गांधी जी ने हमारे सम्मुख यह आदर्श रखा था कि हम प्रत्येक के प्रत्येक आंसू को पौंछें। यह तो मैं नहीं मानता कि हमने इस आदर्श का पूर्णतया पालन किया किन्तु लोगों का दुख दूर करने के लिये हमें निरन्तर प्रयत्न करते रहना चाहिए।"

३५

बाल दिवस की कल्पना

जवाहरलाल नेहरू यह भली भांति जानते थे कि भारत का भविष्य बच्चों के हाथों में है, इसलिए उनके प्रशंसकों ने उनकी जन्म तिथि १४ नवम्बर को बच्चों को समर्पित कर दिया। और आज सभी जानते हैं कि इसे 'बाल दिवस' कहा जाता है। और जब वे कभी इन समारोहों में सम्मिलित होते थे तो अन्य राजनेताओं से अलग सारी औपचारिकता को भूल जाते थे। कभी तो 'चाचा नेहरू' किसी बच्चे को अपनी पीठ पर चढ़ा लेते थे और कभी किसी बच्चे के गले में अपनी माला डाल देते थे और जब बच्चे गाने लगते थे तो वे भी उनके साथ गाने में सम्मिलित हो जाते थे। हमारे देश के बहुत से बच्चे अपनी हस्ताक्षर पुस्तिका में उनके हस्ताक्षर संजोये हुए हैं। वे बहुत सारे राजनीतिक, सामाजिक और अन्तर्राष्ट्रीय कार्यों में व्यस्त रहते थे। इस प्रकार उनको बहुत थोड़ा या बिल्कुल भी समय आराम के लिए नहीं मिलता था। किन्तु बच्चों की पार्टी में जाने के लिए वे सब निर्धारित कार्यक्रमों की अवहेलना कर वहां पहुंच जाते थे।

घृणा और लालच

किसी एक शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा दूसरे शक्तिशाली राष्ट्र के प्रति घृणा के भाव के कारण संसार में दो भयंकर विश्व युद्ध हो चुके हैं। अभी भी एक राज्य को दूसरे राज्य का डर बना ही रहता है। पुराने साम्राज्यवादी देश जहां अभी कुछ धनी लोग सत्ता में हैं और बहुत सारे निर्धन हैं, वे इन नवोदित रूस जैसे रज्यों को, जहां इन साधारण सांसारिक उपभोगों को प्राप्त कर चुके हैं, ये पसन्द नहीं करते।

ये मौत के सौदागर

पश्चिमी देशों के बड़े-बड़े उद्योगपति अधिक मूल्य पर अपनी मशीनें बेचकर लाभ



प्राप्त करना और अन्य अविकसित देशों से कम मूल्य पर कच्चा माल खरीदना चाहते हैं।

ये मौत के सौदागर कुछ देशों को शस्त्र बेचकर पैसा कमाना चाहते हैं। इस प्रकार के मुनाफाखोर राज्य, जहां कहीं भी इनका वश चलता है, वहां-वहां शस्त्र बेच कर छोटे-छोटे राज्यों में परस्पर नित्य प्रति झगड़े की स्थिति को बनाए रखते हैं।

संयुक्त राज्य अमेरिका तो चाहता है कि वही संसार में एकमात्र शस्त्र सज्जित राज्य बना रहे। उसके बराबर दूसरा बड़ा शक्तिशाली राज्य रूस तो सदा अमेरिका से अपनी तथा अपने अन्य यूरोपीय मित्र राष्ट्रों की सुरक्षा में ही लगा रहता है।

३६

दुखान्त युग

इस प्रकार हमारा यह आज का युग दुख भरा युग है। नित्य प्रति हमारे ऊपर तीसरे विश्व युद्ध का खतरा लटका रहता है, जिसमें कि केवल अणु बमों की ही वर्षा होगी। ये उन गोदामों में इतनी अधिक मात्रा में भरे पड़े हैं कि जिससे इस धरती को एक नहीं अनेक बार नष्ट कर सकें। समस्त मानवता इससे भयाक्रांत है।

जवाहरलाल नेहरू का विश्वास था कि यदि हम बमों पर प्रतिबन्ध लगा सकें तो इससे भावी तृतीय विश्व युद्ध को रोका जा सकता है। और उनका विचार था कि यदि संसार में युद्ध ही नहीं होगा तो बमों पर व्यय किया जाने वाला धन भूखों को भोजन, रोगियों को चिकित्सा, कुपोषण के शिकारों को पोषक आहार देगा, अकाल को रोकने में सहायक होगा, रहने के लिए घरों का निर्माण होगा, बच्चों के लिए स्कूल बनेंगे। इस प्रकार सारा विश्व नाच-गाना, खाना-पीना आदि में आनन्द का उपभोग करेगा।

विश्व शांति

इस प्रकार सोचते हुए एक नई जीवन पद्धति आविष्कर्ता थे जिससे विश्व में शांति रहती।

प्लाटो ने जिसको आदर्श शासक कहा है वे उस प्रकार के दार्शनिक-राजनेता के रूप में थे।

नये विश्व के निर्माता

लियोनार्डो डा० विन्सी, जिसने अनेक नई मशीनों का आविष्कार किया था, जिसने बहुत ही सुन्दर चित्रों को चित्रित किया था, यहां तक कि जिसने १५वीं शती में हवाई जहाज तक उड़ाने का यत्न किया था, जवाहरलाल नेहरू उसी प्रकार के व्यक्ति



लगते थे। उनकी तुलना टैगोर जैसे कार्यरत कवि से भी की जा सकती है। किन्तु वास्तव में नेहरू की किसी से तुलना ही नहीं की जा सकती। वे स्वयं में एक अनुपम व्यक्ति थे। उनको नेहरू युग का निर्माता माना जा सकता है जो चाहते थे कि सभी नर,नारी और बच्चे इस धरती पर सुखपूर्वक रह सकें। वे मनुष्य के सम्मान के पक्षधर थे। वे मानवप्राणी की पूजा करते थे और मनुष्य उनकी पूजा करते थे।

वे अब नहीं हैं। किन्तु इस प्रकार का मनुष्य तो कभी मरता ही नहीं। वे हम सब में, हमारे रूप में ही विद्यमान हैं। अपने अनुपम पत्र, अपनी अन्तिम इच्छा, अपने मृत्यु-पत्र में ऐसा लगता है कि वे स्वयं इस बात से परिचित थे कि वे अनश्वर भारत के एक अभिन्न अंग हैं।

उन्होंने लिखा : "यद्यपि मैंने रूढ़िवादी रीति-रिवाजों और परम्पराओं में से बहुत कुछ को छोड़ दिया है और मैं इस बात के लिए उत्सुक हूं कि भारत उन सबका परित्याग कर दे जिसके कारण वह परवश हो जाता है, उसके वासी परस्पर विभाजित हो जाते हैं और जिनके कारण बहुत से लोग दमित बन जाते हैं, जिससे मानव के मन मस्तिष्क की उचित उन्नति एवं विकास नहीं हो पाता। यद्यपि मैं यह सब चाहता हूं किन्तु मैं यह भी नहीं चाहता कि अपने अतीत से मैं बिल्कुल ही अलग हो जाऊं। मैं अपने उस उज्ज्वल अतीत के प्रति, जो हमारा रहा है और जो आज भी विद्यमान है, गर्व अनुभव करता हूं। और इस बात को भी भली भांति जानता हूं कि अन्य लोगों की ही भांति मैं भी उस अटूट शृंखला से, जो कि भारत का चिरविस्मरणीय अतीत है, जो कि इतिहास के आदि युग से सम्बन्धित है, जुड़ा रहना चाहता हूं। उस शृंखला को मैं नहीं तोड़ूंगा। मैं इसको सुरक्षित रखूंगा और इससे प्रेरणा लेता रहूंगा। और मेरी आकांक्षा की साक्षी में, भारत के सांस्कृतिक विरासत के प्रति श्रद्धांजलि के रूप में, मैं यह प्रार्थना कर रहा हूं कि मेरी अस्थियों में से थोड़ी-सी प्रयाग में गंगा में, जो कि इनको उस समुद्र तक जो भारत के चरण पखारता है, ले जायेंगी, डाल दी जाएं।"

जो व्यक्ति उनसे मिलने के लिए आया करते थे उनको वे गुलाबी गुलाब भेंट किया करते थे।

इस प्रकार यह गुलाबी गुलाब हम लोगों के लिए उस महान् आत्मा, जो कि भारत को मुक्त कराने में सूत्रधार का कार्य करती रही, जो कि किसी एक की न होकर समस्त मानवता की रही, उसकी स्मृति की प्रतीक रूप में रहेगी।

□□

